प्रथम अध्याय

हिंदी पत्रकारिता का उद्भव और विकास

प्रथम अध्याय : हिंदी पत्रकारिता का उद्भव और विकास

- भूमिका
- पत्रकारिता का अर्थ और परिभाषा
- पत्रकारिता का जन्म और विकास
- पत्रकारिता के कार्य
- पत्रकारिता के सिद्धांत
- भारत में पत्रकारिता का आरंभ
- प्राचीन काल
- मध्यकाल
- वर्तमान काल
- हिंदी पत्रकारिता : उद्भव और विकास
- हिंदी पत्रकारिता का उद्भव काल
- हिंदी पत्रकारिता का भारतेंदु (विकास) काल
- हिंदी पत्रकारिता का द्विवेदी (उत्थान) काल
- हिंदी पत्रकारिता का गाँधी काल
- स्वातंत्र्योत्तर काल की हिंदी पत्रकारिता
- हिंदी पत्रकारिता का उद्देश्य और दायित्व
- हिंदी पत्रकारिता का स्वरूप और महत्व
- हिंदी पत्रकारिता का क्षेत्र
- हिंदी पत्रकारिता का वर्तमान परिदृश्य
- हिंदी पत्रकारिता का भविष्य
- निष्कर्ष

प्रथम अध्याय : हिन्दी पत्रकारिता का उद्भव और विकास

भूमिका :

वर्तमान जीवन की घटनाओं, परिघटनाओं, विसंगतियों, आवश्यकताओं, उपलब्धियों तथा अनिवार्यताओं को सही ढंग से प्रकट करने का कार्य आज जिस माध्यम के द्वारा अधिकार पूर्वक संपन हो रहा है वह माध्यम है पत्रकारिता।

यह चुनौती भरा कार्य पत्रकारिता ही कर सकती है। यदि हम ऐसा कहें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। वास्तव में यह ऐसा सूत्र है, जो मानव और इस समाज को विश्व से जोड़ता है। इसे लोकतंत्र के 'चौथे स्तम्भ' की संज्ञा दी जाती है। पत्रकारिता लोकतंत्र का प्रहरी है। अतः पत्रकारिता एक गंभीर एवं उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य है। इसका लक्ष्य एक आदर्श समाज की स्थापना करना है।

पत्रकारिता का जन्म और विकास मानव की स्वतंत्र चेतना की अभिव्यक्ति के रूप में हुआ हैं। यह सच है कि संवाद पत्रकारिता विधा के जन्म से पहले भी था और निश्चित तौर पर मानव सभ्यता के विकास में तब भी उसकी निर्णायक भूमिका थी लेकिन पत्रकारिता के जन्म के बाद संवाद कला के साथ सभ्यता के विकास में भी तेजी आई। पत्रकारिता ही वह विधा और वह कला है जिसने दुनिया के विभिन्न जाति समूहों को एकसूत्र में पिरोया है। दुनिया के पहले समाचार पत्र के प्रकाशन के साथ ही पत्रकारिता का मूल ध्येय आरम्भ में मानव मात्र की स्वतंत्रता और लोकतान्त्रिक मूल्यों का विकास था, जैसे-जैसे जनसंचार के माध्यमों का विकास होता गया पत्रकारिता के आयाम भी बढ़ते चले गए। इस तरह अस्तित्व में आई आधुनिक पत्रकारिता अभिव्यक्ति और संवाद संप्रेषण का माध्यम होने के साथ-साथ ज्ञान विज्ञान, मनोरंजन एवं औद्योगिक-व्यवसायिक प्रचार-प्रसार का साधन बनी।

पत्रकारिता अभिव्यक्ति की एक मनोरम कला भी हैं, इसका कार्य जनता तथा जन-नेताओं के समक्ष लोक कल्याण सम्बन्धी कार्यों की सूची प्रस्तुत करना है। समाचार पत्र

दैनिक जीवन का अनिवार्य अंग है। यह प्रबुध्द पाठकों के लिए एक ऐसा दर्पण है जिसकी सहायता से वे विश्व की गतिविधि, स्वराष्ट्र के उत्थान-पतन तथा क्षेत्र विशेष की ज्वलंत समस्याओं से सुपरिचित होते हैं। समाज का वास्तविक प्रतिबिम्ब समाचार पत्रों में पाया जाता है। समाचार पत्रों में सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् की आराधना होती है। हिन्दी पत्रकारिता का वर्तमान स्वर किसी भी तरह से अपनी पूर्व पत्रकारिता से कमतर या कमजोर दिखाई नहीं पड़ता। स्वतंत्रता से पूर्व हिन्दी पत्रकारिता विषय केन्द्रित थी। स्वतंत्रता प्राप्ति करने की दिशा में एक साधन के रूप में, परन्तु आज चुनौती दूसरी है। समृध्द राष्ट्र की कल्पना और उसको मूर्त रूप प्रदान करना है।

पत्रकारिता और पत्रकार दोनों ही शब्द 20वीं सदी के अंतिम दशक तक वातानुकूलित कक्षों से निकलकर देश के खेत-खलिहानों और चौपालों में चर्चा, परिचर्चा, प्रशंसा, आलोचना और विवेचना की हकदार बन चुके हैं। आज शायद ही कोई हो जिसे पत्रकार शब्द का उच्चारण करते ही किसी नए समाचार के आगमन की प्रतीक्षा न रहती हो। हम सभी नए समाचार जानना और पढ़ना चाहते हैं। समाचार क्या है? कैसे लिखा जाता है? इसकी स्रोत क्या है? आदि तमाम सवाल समाचार पढ़ने वाले पाठक और इस विधा की शिक्षा हासिल करने वाले छात्रों के जेहन में जन्म लेते हैं। सभी इन प्रश्नों का हल चाहते हैं लेकिन सही मायने में समाचार का आदि और अंत कदापि सुनिश्चित नहीं होता। फिर भी समाचार लेखन, संपादन, प्रेषण और प्रकाशन से जुड़ी विधा और कला के सर्वांग पक्षों को समाज तक सरलतम रूप में पहुंचाना वर्तमान की महती आवश्यकता है।

आधुनिक युग की बौध्दिकता एवं विवेकयुक्त दृष्टि ने इसे मात्र मनोरंजन, भोजनोपरांत नींद लेना अथवा यात्रा आदि में टाइम-पास मनोरंजन की हल्की-फुल्की 'चीज' जैसी स्थिति से उठाकर चिंतन और प्रेरणा की विधा के रूप में प्रतिष्ठित कर उसके विकास और समृध्दि के नवीन द्वार उन्मुक्त किये है। निसंदेह पत्रकारिता जगत में समाचार पत्रों और पत्रिकाओं का स्थान सर्वोपरि है। इसमें 'हंस' की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। प्रेमचंद के 'हंस' ने साहित्य को प्रतिष्ठा दी और उसी परंपरा को राजेंद्र यादव ने कायम रखा है।

पत्रकारिता का अर्थ एवं परिभाषा :

"ऐ अहले नजर शौके नजर खूब है लेकिन।

जो सच की हक़ीकत को ना समझे वो नजर क्या?।।"

(अल्लामा इक़बाल)

पराधीनता के काले दौर अर्थात् स्वतंत्रता पूर्व 'अखबार' महज़ संवाद, सूचना, सन्देश, इत्तिला, पैगाम और समाचार प्रसारित करने वाले कोरे अखबार ही नहीं थे, बल्कि वह खबरगीरी के साथ-साथ बृहत्तर-महत्तर उद्देश्यों से संपृक्त स्वतंत्रता संग्राम के स्वतः स्फूर्त स्वयं में बहुत बड़े आन्दोलन भी थे। इस समय के समाचार पत्रों ने उन दबे-कुचले वर्ग के लोगों की दर्द और दंश को शब्द दिए, जिनकी अपनी कोई आवाज़ पहचान नहीं थी, स्पष्टतः यह कि इस समय की पत्रकारिता खोई हुई हाशिये की आवाज के तलाश का माध्यम बनती थी। तत्कालीन समाचार-पत्रों ने शोषितों और बेजुबानों के कष्टों को साझा किया, जन आन्दोलनों का माध्यम बन, उनके संघर्षमयी जीवन गाथा के मुखर प्रवक्ता बने। पर, देश के स्वाधीन होते ही एक चकित कर देनेवाला सच सामने आया कि वही पत्रकारिता कालांतर में 'मिशन' के स्थान पर पैसा कमाने की 'मशीन' तथा 'कमीशन-एम्बीशन' (Commission- दलाली, Ambition- महत्वाकांक्षा) के साथ-साथ 'प्रोफेशन (Profession- पेशा, वृत्ति या धंधा) से आगे बढ़कर 'सेंसेशन (Sensation- सनसनी) की ओर चली गयी। फिलहल, वह वाणीबीर और शब्दशूर बन गरज रही है। उसके सामने भरोसे का जबरदस्त संकट बिना हल किए सवाल की तरह सम्प्रति आन खड़ा हुआ है। कुल मिलाकर सियासी ढपली की शिकार पत्रकारिता में स्वस्थ विचारों का आपातकाल लगा हुआ है।

वस्तुतः इस देश में नव उदार पूँजीवादियों का एक व्यापक, विशाल बाज़ार बन गया है। यद्यपि अस्सी के दशक में पैदा हुए इस बाजार का फिलाहल कोई राष्ट्रीय चरित्र तो नहीं है, फिर भी, सुप्रसिद्ध पत्रकार स्व. प्रभाष जोशी मानते थे कि "भारत में हालिया जन्मा

बाजार आज की सबसे बड़ी शक्ति है, पूँजी ब्रह्म है और मुनाफा मोक्ष। एक खासियत यह कि इस बाजार का निर्लज्ज उपभोक्तावादी वर्ग भी बगल में खड़ा है। आज की पत्रकारिता इसी बाजार की शक्ति से परिचालित है। यह बाजार ही पत्रकारिता का मूलमंत्र बन गया है। सच तो यह है कि आज यह बाजार पसरता जा रहा है। यह बाजार आदमी को माल की तरह खरीद रहा है। जिस पत्रकारिता को विद्वानों ने आदरपूर्वक 'पाँचवाँ वेद' तथा वर्तमान युग का सबसे प्रभावशाली 'अविष्कार' कहा था, सम्प्रति वही पत्रकारिता विश्वास, मूल्य और भावनाओं को ठेस पहुँचाती बाजार और मंडी का माल बन गई है।"1 आज के इस बाजारवादी दौर में पत्रकारिता ने बाजारवादी लटके-झटके अख्तियार कर लिया। आम और सर्वजन की आवाज अखबारों से गायब होती चली गई। 'पाजिटिव न्यूज' के नाम पर मुद्दे भुला दिए गए। अपने विशिष्ट वर्गीय-चरित्र के तहत आज का अखबार व टीवी प्रभुत्वशाली और प्रभुवर्ग के हितों का पोषक हो गया।

पत्रकारिता का शाब्दिक अर्थ :

'पत्रकारिता' शब्द अंग्रेजी के जर्नलिज्म (Journalism) का हिंदी रूपांतरण है। शब्दार्थ की दृष्टि से "Journalism" शब्द "Journal" से निकला है, जिसका शाब्दिक अर्थ है "दैनिक" अर्थात जिसमें दैनिक गतिविधियों, कार्यों और सरकारी बैठकों का विवरण प्रकाशित होता हो, उसे 'जर्नल' की संज्ञा दी जाती थी, लेकिन आज 'जर्नल' शब्द का प्रयोग गंभीर समालोचनाओं और विद्वानों द्वारा लिखित रचनाओं को प्रकाशित करने वाली पत्रिका के लिए होता है। इसलिए 'जर्नल' शब्द की तुलना में 'Journalism' अर्थात 'पत्रकारिता' शब्द में अधिक व्यापकता है। पत्रकारिता के अंतर्गत समाचार पत्र तो आते ही हैं, साथ-ही-साथ विविध कालिक पत्रिकाएँ भी आती हैं। इन पत्र- पत्रिकाओं की सामग्री का संकलन, लेखन, संपादन, वितरण, प्रबंधन आदि भी पत्रकारिता शब्द की सीमा के अंतर्गत समाहित है इसलिए "छपने वाले लेख-समाचार तैयार करना ही पत्रकारिता नहीं रह गई। आकर्षक शीर्षक देना, पृष्ठों का बनाव-ठनाव, जल्दी से समाचार देने की होड़, देश के प्रमुख उद्योग-

धन्धों के विज्ञापन प्राप्त करने की चतुराई, सुंदर छपाई और पाठक के हाथ में सबसे जल्दी पत्र पहुँचा देने की त्वरा, ये सब पत्रकार-कला के अंतर्गत आ गए।"2

'पत्रकारिता' शब्द का जन्म संस्कृत भाषा के 'पत्र' शब्द में 'कृ' (करना) धातु, जिन+तल्+टाप् प्रत्ययों के योग से हुआ है, जिसका आशय होता है- पत्र-पत्रिकाओं के लिए समाचार और लेख आदि लिखना। इधर, उर्दू में पत्रकारिता के लिए 'खबरनवीसी' कहते है। इस खबरनवीसी या पत्रकारिता के लिए अंग्रेजी में, 'जर्नलिज्म' (Journalism) शब्द का इस्तेमाल किया जाता है। इस 'जर्नलिज्म' शब्द का मूल उत्स 'जर्नल' (Journal) है। विद्वान बताते हैं कि 'जर्नलिज्म' शब्द की व्युत्पत्ति फ्रांसीसी भाषा के 'जर' और 'जर्नल' शब्द से हुई है जिसका अर्थ फ्रांसीसी भाषा में 'एकदिन' और 'समाचार पत्र' है। अमेरिकन इनसाइक्लोपीडिया के अनुसार – 'जर्नलिज्म' फ्रेंच शब्द 'जर्नी' से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ होता है – एक-एक दिवस का कार्य या उसकी विवरणिका प्रस्तुत करना। पत्रकारिता दैनिक जीवन की घटनाओं और उनके आधार पर प्रकाशित पत्रों की संवाहिका होती है। इससे घटनाओं, तथ्यों, व्यवस्थापरकता के साथ-साथ राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और कलात्मक सन्दर्भों की प्रस्तुति होती है। विश्व प्रसिद्ध ग्रन्थ इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटानिया की बात मानें तो रोजाना के कार्यकलापों एवं गतिविधियों, सरकारी बैठकों का विवरण 'जर्नल' में निहित रहता था। सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दी में 'पीरियाडिकल' के स्थान पर लैटिन शब्द 'डियूरनल' एवं 'जर्नल' शब्दों के प्रयोग हुए। इसके पश्चात् बीसवीं शताब्दी में गम्भीर समालोचना और विद्वतापूर्ण प्रकाशन को इसके अंतर्गत् माना गया। 'जर्नल' से बना 'जर्नलिज्म' अपेक्षाकृत व्यापक शब्द है। समाचार-पत्रों एवं विविधकालिक पत्रिकाओं के संपादन एवं लेखन और तत्सम्बन्धी कार्यों को पत्रकारिता के अंतर्गत्त् रखा गया। इस प्रकार समाचारों का संकलन-प्रसारण, विज्ञापन की कला एवं पत्र का व्यवसायिक संगठन पत्रकारिता है।"3

पत्रकारिता की परिभाषा :

सामान्य रूप से देखें तो पत्रकारिता 'समाचारों का जनसंचार' है। कोई भी घटना, सूचना अथवा विचार जब लोगों तक पहुंचाया जाता है, तो वह 'समाचार' बन जाता है। जो व्यक्ति समाचार प्राप्त करता है और उसे प्रकाशित करता है वह "पत्रकार" कहलाता है। विद्वानों ने अत्यंत सम्मान तथा आदर के साथ पत्रकारिता को समय-समय पर परिभाषित किया है इस दृष्टि से ही –

- प्रेरक और उत्तेजित कर देने वाली हर सूचना समाचार है।
- समय पर दी जाने वाली हर सूचना समाचार का रूप धारण कर लेती है।
- किसी घटना की रिपोर्ट ही समाचार है।
- समाचार जल्दी में लिखा गया इतिहास है?

'न्यू बेबस्टर्स डिक्शनरी' में 'पत्रकारिता' को इन शब्दों में परिभाषित किया गया है-

Journalism: The Occupation of conducting a news medium, including publishing, editing, writing or broad-casting. अर्थात प्रकाशन, सम्पादन, लेखन एवं प्रसारणयुक्त समाचार माध्यम का व्यासाय ही पत्रकारिता हैं।4

ऑक्सफोर्ड शब्दकोश में कहा गया है कि - पत्रकार के व्यवसाय का प्रमुख साधन है पत्रकारिता लेखन और जन-सामान्य की स्थितियों का लेखन और संग्रह व 'जनरल्स' की सुरक्षा एवं समूहवृत्ति।

मैथ्यू आर्नेल्ड- पत्रकारिता शीघ्रता में लिखा गया साहित्य है।5

महादेवी वर्मा- पत्रकारिता एक रचनाशील विधा है। इसके बिना समाज को बदलना असम्भव है। अतः पत्रकारों को अपने दायित्व और कर्तव्यों का निर्वाह निष्ठापूर्वक करना चाहिए, क्योंकि उन्हीं के पैरों के छालों से इतिहास लिखा जायेगा।6

मानक हिन्दी कोश- पत्रकारिता वह विधा है, जिसमें पत्रकारों के कार्यों, कर्तव्यों, उद्देश्यों आदि का विवेचन किया जाता है।7

'वैज्ञानिक परिभाषा कोश' में पत्रकारिता के लिए कहा है कि- पत्रकारिता पत्र-पत्रिकाओं के लिए समाचार, लेख आदि एकत्रित तथा संपादित करने, प्रकाशन आदि करने का कार्य है।8

सी. जी. मूलर के अनुसार- पत्रकारिता सामाजिक ज्ञान का व्यवसाय है। इस व्यवसाय में आवश्यक तथ्यों की प्राप्ति, सावधानीपूर्वक उनका मूल्यांकन तथा उचित प्रस्तुतीकरण होता है।9

विलियम स्टीड के अनुसार- कला वृत्ति तथा जन सेवा का ही दूसरा नाम पत्रकारिता है।

श्री विष्णुराव पराड़कर ने समाचार-पत्र के दो मुख्य धर्म माने हैं- एक तो समाज का चित्र खींचना और दूसरा उसे सदुपदेश देना।10

इन्द्र विद्या वाचस्पति- पत्रकारिता 'पांचवां वेद' है जिसके द्वारा हम ज्ञान-विज्ञान संबंधी बातों को जानकर अपने बंद मस्तिष्क को खोलते है।11

जवाहर लाल नेहरू– प्रेस आधुनिक जीवन का एक बेहद जरूरी अंग है, खासकर लोकतंत्र में। प्रेस के पास अपारशक्ति और जिम्मेदारी होती है। प्रेस को सम्मान मिलना चाहिए और सहयोग भी।12

महात्मा गाँधी (जो स्वयं पत्रकार थे) के अनुसार- समाचार-पत्र का पहला उद्देश्य जनता की इच्छाओं, विचारों को समझना और उन्हें व्यक्त करना है। दूसरा उद्देश्य जनता में वांछनीय भावनाओं को जागृत करना है, तीसरा उद्देश्य सार्वजनिक दोषों को निर्ममता पूर्वक प्रकट करना है।13

डॉ कृष्ण विहारी मिश्र के अनुसार- पत्रकारिता वह विद्या है, जिसमें पत्रकारों के कार्यों, कर्तव्यों और उद्देश्यों का विवेचन किया जाता है। जो अपने युग और अपने सम्बन्ध में लिखा जाए, वही पत्रकारिता है।14

डॉ. राम मोहन पाठक कहते हैं कि- पत्रकारिता सूचना का एक माध्यम है। पत्रकारिता दिन भर की घटनाओं की सूचना, उसकी आख्या और सामान्यजन की जिज्ञासा तथा ज्ञान पिपासा के समाधान का भी आधार है। यह मूल रूप में समाचार है।15

डॉ. हरिमोहन का विचार है कि- पत्रकारिता नवीनतम घटनाओं की जानकारी एवं विचारों को सावधानीपूर्वक, चुनकर उनका मूल्यांकन कर, यथावश्यक उनका विश्लेषण या उनकी समीक्षा करते हुए किसी भी तरह के संचार माध्यम (मुद्रित अथवा श्रव्य-दृश्य) की सहायता से जन-जन तक पहुँचाने की प्रक्रिया है।16

डॉ. रामचन्द्र तिवारी के अनुसार- ज्ञान तथा विचारों को समीक्षात्मक टिप्पणियों एवं चित्रों सहित विशाल जनमानस तक पहुँचाना ही पत्रकारिता है।17

डॉ. बद्रीनाथ कपूर के अनुसार- पत्रकारिता पत्र-पत्रिकाओं के लिए समाचार, लेख आदि एकत्रित तथा सम्पादित करने, प्रकाशन आदेश आदि देने का कार्य है।18

टाइम पत्रिका के हिसाब से- पत्रकारिता इधर से उधर एकत्रित सूचना का केन्द्र है, जो सही अंतर्दृष्टि और प्रेषण का कार्य इस ढंग से करती है कि सत्य का पालन हो और घटनाओं के सहीपन को देखा गया हो, भले ही तुरन्त न सही, पर अधिक साक्षी हो।19

डॉ. प्रेमनाथ चर्तुवेदी का विचार है कि- पत्रकारिता विशिष्ट देश काल, परिस्थितिगत तथ्यों को अमूर्त्त, परोक्ष, मूल्यों के सन्दर्भ और आलोक में उपस्थित करती है।20

अतः हम कह सकते हैं कि पत्रकारिता आधुनिक ज्ञान की एक ऐसी विधा है, जिसमें शुभ और समदृष्टि का आलोक है, लोक मंगल का भाव है, असत्य, अशिव और असुंदर के विरुद्ध 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' का उदघोष है, जो समय और समाज के संदर्भ में सचेतन दृष्टि रखती है और आम जन को दायित्व से परिचित कराने में सक्रिय योगदान देती है। इसलिए यह अनुपम कला के साथ ही अद्भुत जनसेवा है, समाज का प्रहरी है और कबीर सरीखा गुरु भी है। यह अंधेरा और अंधेरे की पहचान कराती है और समस्या के समाधान की दिशाओं पर रोशनी भी डालती है। इस दृष्टि से पत्रकारिता किसी भी सभ्य समाज की सबसे बड़ी पूंजी है, सबसे बड़ा हथियार है। जिस कार्य को बड़े से बड़े योद्धा करने में असमर्थ हो जाएं उसे पत्रकारिता के द्वारा आसानी से किया जा सकता है, तभी तो अकबर इलाहाबादी ने कहा है-

खीचों न कमानों को, न तलवार निकालो।

जब तोप मुकाबिल हो तो, अखबार निकालो।।

पत्रकारिता का जन्म और विकास :

पत्रकारिता का उदय :

भारत की बात छोड़ भी दें तो ई.पू. पाँचवीं शताब्दी के पहले रोम में ऐसे संदेश लेखक थे, जो हस्तलिखित संदेशों को राजधानी से दूर-दराज के लोगों को अवगत कराते थे। इन संदेशों का बड़ा महत्व राजनीतिज्ञों और व्यापारियों के लिए था। "ई.पू. 60 में रोमन साम्राज्य का नेतृत्व संभालते ही जूलियस सीजर ने दैनिक समाचार का बुलेटिन 'एक्टा डार्यना' नाम से आरंभ किया, जिसमें सरकारी घोषणाएं प्रकाशित की जाती थी। 'एक्टा सिनेटस' में रोमन सीनेट की प्रमुख घटनाओं के अतिरिक्त भाषण और विधेयक छपते थे तथा 'एक्टा पब्लिका' में आम-जन की हितकारी सूचनाओं का प्रकाशन होता था।"21

विद्वानों ने सदियों, सहस्त्राब्दियों लम्बी मानव सभ्यता की विकास यात्रा को कई युगों और चरणों में विभाजित किया है। आरंभ में मानव जब जंगलों में रहता था उसमें संवाद कला थी, भाषा की विशिष्टता थी। जिस कारण उसने जानवरों को बस में कर उन्हें पालना सीखा। जंगली वनस्पतियों को बोना आरंभ किया। धीरे-धीरे वह लकड़ी, पत्थर और धातुओं का उपयोग अपनी सुख-सुविधाएं बढ़ाने के लिए करने लगा। इस तरह हज़ारों-लाखों वर्षों की यात्रा के बाद मानव सभ्यता ने आधुनिक युग में प्रवेश किया और संवाद कला और अभिव्यक्ति कौशल के फलस्वरूप लिपि और वर्णों का आविष्कार हुआ।

लिपि के आविष्कार के बाद संवाद को स्थायित्व मिला। वर्ण प्रतीक बने और क्रमिक विकास प्रक्रिया में ग्रंथों की रचना हुई। लिपि के आविष्कार से लेकर ग्रंथों अथवा पुस्तकों के लिखे जाने तक आदमी ने हजारों साल की विकास यात्रा तय की। मानव के ज्ञान की इस परंपरा ने उसकी संचार शक्ति में वृद्धि की। संचार शक्ति के क्रमिक विकास में मुद्रण कला और कागज का निर्माण हुआ। इन आविष्कारों से मानव के सामाजिक जीवन में मूलभूत परिवर्तन हुआ।

मुद्रण तकनीक का आविष्कार :

मुद्रण कला के आविष्कार और कागज के निर्माण से ज्ञान के प्रसार और स्थायित्व की संभावनाएं बढ़ी और पुस्तकों के प्रकाशन का रास्ता खुला। परन्तु तब भी ज्ञान एक छोटे से वर्ग के हाथों में सीमित रहा। समाचार पत्रों ने उसे सर्वसुलभ कराया और उसका दायरा बढ़ाया। इस तरह मानव की संवाद कला और संचार शक्ति के साथ-साथ ज्ञान - विज्ञान के आधुनिकतम माध्यम पत्रकारिता का जन्म हुआ।

पूर्व में मुद्रण और पत्रकारिता के संबंध को शरीर और आत्मा की संज्ञा दी जाती थी। इसलिए माना जाता था कि पत्रकारिता का जन्म भी मुद्रण कला के साथ हो गया था। परन्तु मुद्रण मशीन अर्थात् प्रिंटिंग प्रेस के ऐतिहासिक विवरणों से इसकी पुष्टि नहीं होती। "पुरातात्विक खोजों से ज्ञात होता है कि मुद्रण कला का आविष्कार ईसा की दूसरी शताब्दी में हो गया था। चीन में 175 ईसवी सन् के ठप्पों से मुद्रित ग्रंथों के कुछ भाग अब तक उपलब्ध हैं। इसके अतिरिक्त 972 ई. में एक लाख तीस हजार पृष्ठों के त्रिपिटक ग्रंथ चीन में मुद्रित होने की बात भी इतिहासकार कहते हैं।"22

मानव सभ्यता के विकास में चीन के इस योगदान को पश्चिमी देशों के विद्वान लगभग नकारते हुए से लगते हैं, वे मुद्रण तकनीक का आरंभ आधुनिक पद्धति की मशीनों के निर्माण से जोड़ते हैं। "इस तरह की धातु के टाइप वाली प्रिंटिंग प्रेस सर्वप्रथम 1440-56 के बीच जर्मनी में स्थापित हुई थी। तत्पश्चात 1466 में फ्रांस में दूसरी प्रिंटिंग प्रेस लगी थी। पत्रकारिता के क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभाने वाला ग्रेट ब्रिटेन प्रिंटिंग प्रेस निर्माण के मामले में तीसरे स्थान पर है। ब्रिटेन में पहली प्रेस 1477 में स्थापित हुई थी। तत्पश्चात 1544 में पुर्तगाल में प्रिंटिंग तकनीकी और कला का विकास हुआ। भारत में भी उसके कुछ ही वर्ष बाद (संभवतः 1550 में) पहली प्रेस लग गई थी। ईसाई धर्म प्रचारकों द्वारा गोवा में स्थापित भारत की पहली प्रेस पुर्तगाली (डच) भाषा की थी। उसी प्रेस से 1560 में रोमन लिपि में पहली पुस्तक प्रकाशित हुई थी।"23 उसके बाद से इसका विकास अवाध गति से होता चला आ रहा है।

दुनिया का पहला अखबार :

प्रिंटिंग प्रेस निर्माण के कई सालों बाद तक उनमें किताबें और शासकीय कागजात ही मुद्रित होते रहे। यूरोप में जब इसका आविष्कार हुआ था उस समय पुनर्जागरण आंदोलन एक निर्णायक मोड़ की ओर बढ़ रहा था हालांकि पुनर्जागरण एवं धर्म सुधार आंदोलन तेरहवीं शताब्दी में ही शुरू हो गया था।

"15वीं सदी की अंतिम वर्षों और 16वीं सदी के पूर्वाद्ध तक संपूर्ण यूरोप नई बौद्धिक चेतना के प्रभाव में आ चुका था। मार्टिन लूथर, मेलांकथन, ज्वीन्गली, काल्वें आदि के विचारों से आहत सामंतवाद अंतिम सांसे ले रहा था। विभिन्न राज्यों के राजा अपना राज्य विस्तार और अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए आपस में लड़ रहे थे। पूरे महाद्वीप में युद्धों का अंतहीन सिलसिला जारी था। डच यानी नीदरलैंड के लोगों पर मार्टिन लूथर और काल्वें की विचारधाराओं का प्रभाव था। वे चर्च यानी धर्म को विकास की बहुत बड़ी बाधा समझते थे। स्पेनी शासन ने इसी कारण जब 'प्रोटेस्टेंट्स' पर अंकुश लगाना आरंभ किया तो उन्होंने जनता को जागृत करने के लिए ऐसे माध्यम का सहारा लिया कि मानव सभ्यता के विकास की दिशा ही बदल गई। वह माध्यम था दुनिया का पहला समाचार पत्र 'न्यू जाइटुंग'। न्यू जाइटुंग ने नीदरलैंड की जनता को मुक्ति संघर्ष के लिए प्रेरित किया था। ऐतिहासिक प्रमाणों के अनुसार न्यू जाइटुंग का प्रकाशन 1526 में आरंभ हुआ था।"24

खबर सुनने-सुनाने की मानवीय जिज्ञासा तो बहुत पहले से ही जगजाहिर थी, लेकिन मुद्रित रूप में खबरों को आम जनता तक पहुंचाने का असली श्रेय जर्मनी के जांस गुटेनबर्ग को ही जाता है। "उसने मुद्रणालय में पुस्तकों को छापने की कला का आविष्कार किया। गुटेनबर्ग ने ऐसे टाइपों का आविष्कार किया जिन्हें अलग-अलग शब्दों के बनाने में उपयोग में लाया जा सकता था। गुटेनबर्ग की मुद्रण-कला का बड़ी तेजी से विकास हुआ। इंग्लैंड मे सन् 1476 ई. में ही मुद्रणालय की स्थापना हो गई। मैक्सिको में सन् 1556 ई. में मुद्रणालय की स्थापना हो पाई। सन् 1500 के आप-पास इस मुद्रण कला की लोकप्रियता का प्रमाण इस तथ्य से मिलता हैं कि इस अवधि में पूरे यूरोप में लगभग डेढ़ हजार पुस्तकों

का प्रकाशन हुआ। इस कला ने अपना सिक्का ऐसा जमाया कि जो खबरें हस्तलिखित रूप में भेजी जाती थीं, वे मुद्रित रूप में भी जनता को प्राप्त होने लगीं। लेकिन यह भी सच है कि मुद्रणालय की सुविधा उपलब्ध होने के बावजूद इंग्लैंड में समाचार पत्रों का त्वरित विकास नहीं हो सका। दरअसल, उस वक्त इंग्लैंड में धार्मिक और राजनीतिक अशान्ति थी। इसलिए राज्य-सत्ता ने इसकी अनुमति नहीं दी और इस सुविधा का उपयोग सामयिक घटनाओं या कथा-गायकों के कार्यक्रमों-संबंधी पर्चियाँ छापने तक ही सीमित रहा। छापाखाने के 85 वर्ष बाद सन् 1561 ई. के आस-पास एक पृष्ठीय 'न्यूज़ आउट ऑफ केंट' नामक पत्र प्रकाशित होने की सूचना जरुर मिलती है, जिसमें भदेस शैली में कुछ खबरें और सामान्य कविताएं छपा करती थीं। सन् 1575 में 'न्यू न्यूज' नामक अनियमितकालीन पत्र छपने की सूचना भी मिलती है।

सन् 1575 से 1604 तक चौबीस वर्षों का समय अंग्रेजी पत्रकारिता का शून्य काल था। इस बीच 'पार्टन लेटर्स' जैसे हस्तलिखित पर्चों का योगदान है। युद्ध, दरबार आदि की खबरों वाली पर्चियाँ जरूर बिकती थी। सन् 1605 के आरंभ में ही इंग्लैंड में थानानियल बटर ने हत्या, कत्ल आदि की खबरें अपने पत्र में प्रकाशित की। और सन् 1611 में 'न्यूज फ्रॉम स्पेन' नामक पत्र के माध्यम से विदेशी खबरें प्रकाशित करने लगा। सन् 1920 इंग्लैंड की अंग्रेजी पत्रकारिता के लिए ऐतिहासिक दिन माना जाता है क्योंकि एमस्टर्डम से नियमित रूप से अंग्रेजी में यहीं से सबसे पहला अखबार छपा। बोर्ने, थॉमस आर्चर तथा नाथनियल बटर तीनों अंग्रेजी पत्रकारिता के इतिहास में अग्रणी व्यक्ति माने जाते हैं। इसके बाद तो इंग्लैंड में पत्रकारिता ने अपने पांव इतने अधिक मजबूत कर लिए कि वह लोकतंत्र के अनिवार्य चतुर्थ स्तंभ के रूप में प्रतिष्ठित हो गई।

"नीदरलैंड से दुनिया के पहले समाचार पत्र न्यू जाईटुंग का प्रकाशन आरंभ होने के करीब एक शताब्दी तक दुनिया में दूसरे समाचार पत्र के प्रकाशन के प्रमाण नहीं मिलते। जर्मनी के फ्रैंकफर्त से 1615 में दुनिया के दूसरे समाचार पत्र 'फ्रैंक फुतेर जर्नल' का प्रकाशन हुआ। तत्पश्चात फ्रांस से गजट द फ्रांस (1621 ई.), बेल्जियम से गजट वैन गट (1623 ई.), लंदन (इंग्लैंड) से लंदन गजट (1667 ई.) आदि समाचार पत्र आरम्भ हुए।

संयुक्त राज्य अमेरिका से पहला समाचार पत्र पुब्लिक ओकरेंसेज (1690 ई.) में प्रकाशित हुआ था। दैनिक पत्रों के इतिहास में पहला अंग्रेजी दैनिक 'डेली करंट' 11 मार्च 1702 को आरंभ हुआ था।"25

इस तरह आरम्भ पत्रकारिता ने अपने शैशवकाल से ही मानव सभ्यता की विकास यात्रा को महान ऊर्जा प्रदान करना आरंभ कर दिया था। यूरोपीय पुनर्जागरण को निर्णायक रूप देने में पत्रकारिता की भूमिका सर्वोपरि थी। विश्व के अधिकांश देशों पर अंग्रेज महाप्रभुओं का आधिपत्य था। वे अपने देश में समाचार-पत्र पढ़ने के अभ्यस्त थे। यह उनकी आदतों में शामिल हो चुका था। वस्तुतः सबेरे-सबेरे समाचार-पत्र पढ़ने की जब आदत लग जाती है। तो वह एक प्रकार से नशा का रूप धारण करती और पढ़ने को यदि वह नहीं मिले तो आत्मा में अतिरिक्त बेचैनी और असंतोष का भाव बना रहता है। 1766 में भारत में रह रहे बोल्ट्स नामक अंग्रेज ने इसी आवश्यकता के शमन के लिए कलकत्ता में कौंसिल हाउस पर एक घोषणा चिपकाकर आग्रह किया : "जनता को, श्री बोल्ट्स इस माध्यम के द्वारा यह सूचना देना चाहते हैं कि इस शहर में एक मुद्रणालय की अत्यंत आवश्यकता है। इसके अभाव में व्यापार को बहुत नुकसान होता है और ब्रिटिश नागरिकों को उनके हितों की सूचनाएं प्रदान करने में बहुत दिक्कत होती है, अतः वे किसी भी ऐसे व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह को पूरा सहयोग देने के लिए तैयार हैं, जो मुद्रणालय की व्यवसाय तथा मुद्रण-व्यवसाय के पूर्ण जानकर हों और टाइपों तथा अन्य सामग्री की मदद से मुद्रण कार्य कर सकें।

पत्रकारिता के कार्य :

आज पत्रकारिता का तीन मुख्य कार्य हो चला है। पहला सूचना प्रदान करना, दूसरा शिक्षा और तीसरा मनोरंजन करना। इसके अलावा लोकतंत्र की रक्षा एवं जनमत संग्रह करना इसके मुख्य कार्य में शामिल हैं।

सूचना प्रदान करना :

पत्रकारिता का मुख्य कार्य सूचनाओं को लोगों तक पहुंचना है। समाचार अपने समय के विचार, घटना और समस्याओं के बारे में सूचना प्रदान करता है। यानी कि समाचार के माध्यम से देश दुनिया की समसामयिक घटनाओं, समस्याओं और विचारों की सूचना लोगों तक पहुंचाया जाता है। इस सूचना का सीधे-सीधे अधिक से अधिक लोगों पर प्रभाव पड़ता है।

शिक्षा प्रदान करना :

यह समाचार हमें विभिन्न समाचार माध्यमों के जरिए हमारे घरों में पहुंचते हैं। समाचार सगंठनों में काम करने वाले पत्रकार देश दुनिया में घटने वाली घटनाओं को समाचार के रूप में परिवर्तित करके हम तक पहुंचाते हैं। यह हमें विभिन्न विषय में शिक्षा प्रदान करते हैं।

लोकतंत्र की सुरक्षा एवं बचाव :

पत्रकारिता की पहुंच का सीधा अर्थ है जनमत की पहुंच। इसलिए कहा गया है कि पत्रकारिता लोकतंत्र की सुरक्षा एवं बचाव का सबसे बड़ा माध्यम है। यह दोनों नेता एवं जनता के लिए लाभकारी है। नेता जनता तक अपनी सुविधा अनुसार पहुंच पाते हैं लेकिन खासकर के इलेक्ट्रानिक मीडिया के माध्यम से नेता एक ही समय में काफी लोगों तक पहुंच पाने में सक्षम हो जाते हैं।

मीडिया में पहुंच का फायदा यह होता है कि उन्हें तथ्य, विचार एवं व्यवहार में सुधारने का मौका मिलता है। रेडियो एवं टी.वी. के कारण अब दूरी मिट गई है। इस तरह नेता इसके माध्यम से जनता तक पहुंच जाते हैं और मीडिया के माध्यम से उनके द्वारा किए गए कार्य का विश्लेषण कर उन्हें चेताया जाता है।

जनमत को आकार देना :

पत्रकारिता के कार्य में सबसे प्रमुख है जनमत को आकार देना, उसको दिशा-निर्देश देना और जनमत का प्रचार प्रसार करना। पत्रकारिता का यह कार्य लोकतंत्र को स्थापित करता है। लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में पत्रकारिता यानि मीडिया लोगों के मध्य जागरूकता लाने का एक सशक्त माध्यम है। यह शासक पर सामूहिक सतर्कता बनाए रखने के लिए सबसे बड़ा अस्त्र है। यह तभी संभव है जब बड़ी आबादी तक मीडिया की पहुंच हो।

पत्रकारिता के सिद्धांत :

पत्रकारिता की साख बनाए रखने के लिए निम्नलिखित सिद्धान्तों का पालन करना जरूरी है-

यथार्थता :

पत्रकार पर सामाजिक और नैतिक मूल्यों की जवाबदेही है। यह वास्तविकता या यथार्थता की ओर इशारा करती है। एक पत्रकार संगठन को अपनी साख बनाए रखने के लिए समाज के यथार्थ को दिखाना होगा। यहां पर कल्पना की कोई जगह नहीं होती है। यह पत्रकारिता की पहली कसौटी है। समाचार समाज के किसी न किसी व्यक्ति, समूह या देश का प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए इसका जुड़ाव सीधे समाज की सच्चाई यानी वास्तविकता से हो जाता है। यानी कि यह कह सकते हैं कि समाचार समाज का प्रतिबिंब होता है।

पत्रकार हमेशा समाचार यथार्थ को पेश करने की कोशिश करता है। यह अपने आप में एक जटिल प्रक्रिया है। दरअसल मनुष्य यथार्थ की नहीं यथार्थ की छवियों की दुनिया में रहता है। किसी भी घटना के बारे में हमें जो भी जानकारियां प्राप्त होती हैं उसी के अनुसार हम उस यथार्थ की एक छवि अपने मस्तिष्क में बना लेते हैं। और यही छवि हमारे लिए वास्तविक यथार्थ का काम करती है।

वस्तुपरकता :

वस्तु की अवधारणा हमें सामाजिक माहौल से मिलते हैं। बचपन से ही हम घर में, स्कूल में, सड़क पर चलते समय हर कदम, हर पल सूचनाएँ प्राप्त करते हैं और दुनिया भर के स्थानों, लोगों, संस्कृतियों आदि सैकड़ों विषय के बारे में अपनी एक धारणा या छवि बना लेते हैं। हमारे मस्तिष्क में अनेक मौकों पर इस तरह की छवियां वास्तविक भी हो सकती है और वास्तविकता से दूर भी हो सकती है।

वस्तुपरकता का संबंध सीधे-सीधे पत्रकार के कर्तव्य से जुड़ा है। जहां तक वस्तुपरकता की बात है पत्रकार समाचार के लिए तथ्यों का संकलन और उसे प्रस्तुत करते हुए अपने आकलन को अपनी धारणाओं या विचारों से प्रभावित नहीं होने देना चाहिए क्योंकि वस्तुपरकता का संबंध हमारे सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक मूल्यों से कहीं अधिक है।

निष्पक्षता :

पत्रकारिता सही और गलत, न्याय और अन्याय जैसे मसलों के बीच तटस्थ नहीं होना चाहिए बल्कि वह निष्पक्ष होते हुए सही एवं न्याय के साथ होना चाहिए। इसलिए पत्रकारिता का प्रमुख सिद्धान्त है उसका निष्पक्ष होना। पत्रकार को उसका शतप्रतिशत पालन करना जरूरी है तभी उसके समाचार संगठन की साख बनी रहेगी। पत्रकार को समाचार लिखते समय न किसी से दोस्ती न किसी से बैर वाले सिद्धांत को अपनाना चाहिए तभी जाकर वह समाचार के साथ न्याय कर पाएगा।

संतुलन :

जब किसी समाचार के कवरेज पर यह आरोप लगाया जाता है कि वह संतुलित नहीं है तो यहां यह बात सामने आती है कि समाचार किसी एक पक्ष की ओर झुका हुआ है। यह ऐसे समाचारों में सामने आती है जब किसी घटना में अनेक पक्ष शामिल हों और उनका

आपस में किसी न किसी रूप में टकराव हो ऐसी स्थिति में पत्रकार को चाहिए कि संबद्ध पक्षों की बात समाचार में अपने-अपने समाचारीय महत्व के अनुसार स्थान देकर समाचार को संतुलित बनाना होगा। एक और स्थिति में जब किसी पर कोई किसी तरह के आरोप लगाए गए हों या इससे मिलती जुलती कोई स्थिति हो तो उस स्थिति में निष्पक्षता और संतुलन की बात आती है। ऐसे समाचारों में हर पक्ष की बात को रखना अनिवार्य हो जाता है अन्यथा एक पक्ष के लिए चरित्र हनन का हथियार बन सकता है।

तीसरी स्थिति में व्यक्तिगत किस्म के आरोपों में आरोपित व्यक्ति के पक्ष को भी स्थान मिलना चाहिए। यह स्थिति तभी संभव हो सकती है जब आरोपित व्यक्ति सार्वजनिक जीवन में है और आरोपों के पक्ष में पक्के सबूत नहीं हैं। लेकिन उस तरह के समाचार में इसकी जरूरत नहीं होती है जो घोषित अपराधी हों या गंभीर अपराध के आरोपी। संतुलन के नाम पर मीडिया इस तरह के तत्वों का मंच नहीं बन सकता है। दूसरी बात यह कि यह सिद्धांत सार्वजनिक मसलों पर व्यक्त किए जाने वाले विचारों और दृष्टिकोणों पर लागू नहीं किया जाना चाहिए।

स्रोत :

समाचार में जो कोई सूचना या जानकारी होती है। पत्रकार उस सूचना एवं जानकारी के आधार पर समाचार तैयार करता है लेकिन किसी सूचना का प्रारंभिक स्रोत पत्रकार नहीं होता है। आमतौर पर वह किसी घटना के घटित होने के समय घटनास्थल पर उपस्थित नहीं होता है। वह घटना के घटने के बाद घटनास्थल पर पहुंचता है इसलिए यह सब कैसे हुआ यह जानने के लिए उसे दूसरे स्रोतों पर निर्भर रहना पड़ता है। उस सूचना एवं जानकारी में क्या सही है, क्या असली घटना है, कौन शामिल है उसकी पूरी जानकारी के बिना यह अधूरा एवं एक पक्षीय होती है जो हमने पत्रकारिता के सिद्धांतों में यथार्थता, वस्तुपरकता, निष्पक्षता और संतुलन पर चर्चा करते हुए देखा है।

किसी भी समाचार के लिए जरूरी सूचना एवं जानकारी प्राप्त करने के लिए समाचार संगठन एवं पत्रकार को कोई न कोई स्रोत की आवश्यकता होती है। यह समाचार स्रोत समाचार संगठन के या पत्रकार के अपने होते हैं। स्रोतों में समाचार एजेंसियां भी आती हैं।

भारत में पत्रकारिता का आरंभ :

प्राचीन काल :

अनादिकाल से चली आ रही जिज्ञासा की वृत्ति मानव मस्तिष्क के विकास एवं ज्ञान के प्रसार का मूल है। इसी चित्त-वृत्ति से प्रेरित होकर मनुष्य यह जानने को उत्सुक रहा है कि उसके आसपास क्या घटित हो रहा है, क्यों घटित हो रहा है। क्योंकि वह जो कुछ घटित हो रहा है। उसके अपने जीवन और कार्य व्यापारों पर होने वाले प्रभाव का पूर्ण अनुमान लगाना चाहता है। उसे अपने स्वयं के तथा अपने परिचय-क्षेत्र के लोगों और स्थानों के विषय में ही जानने की उत्सुकता नहीं रहती है, अपितु अपरिचित व्यक्तियों, स्थानों, नगर और ग्रामों यहाँ तक कि सात समुंदर पार बसे हुए लोगों और देशों के जीवन की हलचल के बारे में भी वह जानना चाहता है। इसीलिए "हर्बर्ट ब्रूकर ने पत्रकारिता की व्याख्या करते हुए कहा है कि 'यह वह माध्यम है जिसके द्वारा हम अपने मस्तिष्क में उस दुनिया के बारे में समस्त सूचनाएं संकलित करते हैं जिसे हम स्वतः कभी नहीं जान सकते हैं।"26

मुद्रण यंत्रों के आविष्कारों के पूर्व जब आधुनिक अर्थ में समाचार-पत्रों की परिकल्पना सम्भव नहीं थी, तब भी विश्व के विभिन्न भागों में सूचना-प्रसार किसी-न-किसी माध्यम से आवश्यक होता है। पत्रकारिता के प्रादुर्भाव से पहले इस प्रकार के प्रमुख माध्यमों का उल्लेख निम्न प्रकार से किया जा सकता है -

- मौखिक पारस्परिक मिलन पर बातचीत के द्वारा।
- डोंडी पिटवाकर या सांकेतिक ढोल बजाकर।
- सार्वजनिक स्थानों पर सूचना पट्टों के द्वारा।

- राज्य की महत्वपूर्ण घोषणाओं को सर्वसाधारण की सूचनार्थ पाषाण-स्तम्भों पर खुदवाकर जैसे - अशोक के शिलालेख आदि के द्वारा।
- पत्रों-पर्चियों द्वारा।
- विभिन्न राज-दरबारों में नियुक्त सन्देश- वाहकों (खबरनवीसों) तथा सूचना संकलित करने वाले राज्य-सेवियों द्वारा।

मौखिक पौराणिक परम्परा :

छापाखाना का आविष्कार मानव-समाज के लिए एक ऐसी आल्हादकारी और अद्भुत घटना है, जिसने मानव को दूर-दराज के क्षेत्रों और वहाँ के लोगों को समाचार और उनकी गतिविधियों से अवगत कराने की दिशा में एक महत्वपूर्ण भूमिका निर्वाहित की, लेकिन इस आविष्कार के पहले से ही मनुष्य पारस्परिक संवाद और खबर जानने की प्रवृत्ति जरूर रखता था। बहरहाल, पौराणिक कथाओं के आधार पर कहा जाता है कि महर्षि नारद इस देश के आदि पत्रकार या खोजी पत्रकारिता के जनक हैं और महर्षि व्यास प्रथम संपादक। नारद जी स्वर्ग से धरती तक सारी सूचनाओं को मौखिक रूप से वितरित करते थे और उनके निमित्त तीनों लोकों की यात्राएं भी करते थे। सही अर्थों में पुख्ता, शुद्ध और निष्पक्ष सूचना देने के कारण वे सभी के प्रिय थे। हाथ में वीणा लिए नारद जी बदलों पर सवार होकर अपनी यात्रा करते थे। उन्हें यातायात की कोई असुविधा नहीं थीं। बिना लाग-लपेट और निर्भीक सूचना सम्प्रेषण के कारण उन्हें 'सुपर जर्नलिस्ट' या 'पत्रकारों के आदि पुरुष' की संज्ञा दी गई थी -

"Hindu mythology records the exploits of a one-man oral newspaper who supplied news to both heaven and earth, to Gods, demons and humans alike. He was Narad, a Rishi, who by modern standards must be considered an ace reporter, who was welcome everywhere......Where, he went, the first question asked of him was. What is the news Narad? He was

a super journalist who carried a man's crusade against injustice and evil and followed a unique method of provoking conflict so that good might result."27

'महाभारत' में संजय की भूमिका भी एक पत्रकार की है, जो धृतराष्ट्र को युद्ध-भूमि का आंखों देखा हाल सुनाते थे। इसी प्रकार संत, सूत, मागध, भांड और चारण भी आंशिक रूप से पत्रकार की भूमिका का निर्वाह करते थे। ये लोग एक प्रकार के काव्यमय समाचारों के संवाहक थे और इनकी पद्यबद्ध सूचनाएं एक स्थान से दूसरे स्थान तक मौखिक माध्यम से सुगमतापूर्वक पहुँच जाती थी। कबूतर भी संदेश-वाहक का काम करते थे।

मध्यकाल :

लिखित समाचारों का चलन :

भारत में जब मुगल-साम्राज्य की स्थापना हुई तो मुगल शासकों ने प्राचीन भारत की इस समाचार-संकलन परम्परा को अपना कर न केवल उसे व्यवस्थित रूप दिया, बल्कि एक बड़े अंश तक विकसित भी किया। वस्तुतः मुगल काल में संवाद संकलन और प्रेषण-कार्य एक संगठन के रूप में विकसित हुआ और पृथक विभाग इस कार्य के लिए खोला गया जिसके अंतर्गत 'वाकिया निगार' विभिन्न दरबारों को महत्वपूर्ण घटनाओं, समारोहों, शिकायतों, जनता के अभाव-अभियोगों तथा प्रशासन के प्रति उसकी प्रतिक्रिया के बारे में नियमित रूप से 'वाकियात' अथवा 'समाचार चिट्ठियां' (न्यूज लेटर्स) प्रस्तुत करते थे। ये वाकियात-वाकिया नवीसों द्वारा एक समाचार पुस्तिका में लिखे जाते थे, जो शासन के प्रमुख केन्द्रों पर उपलब्ध रहती थी। इस प्रकार के विभागाध्यक्ष को वाकिया-निगार की संज्ञा दी जाती थी। अकबर के शासनकाल में इस संरचना के स्वरूप का उल्लेख करते हुए बर्नियर ने लिखा है -

'बादशाह हर जिले में वाकयानवीस नियुक्त करते थे, जो महत्वपूर्ण घटनाओं की रिपोर्ट साँडनी सवारों, काफिलों अथवा हरकारों के मार्फत भिजवाते रहते थे। इन्हीं

दस्तावेजों के आधार पर बादशाह नीति-निर्धारण करते थे और निर्णय लेते थे। इन समाचार सेवाओं का उपयोग ही नहीं दुरुपयोग भी होता था।'28

18वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में जब बंगाल में मुगलों की सरकार बरकरार थी, अंग्रेजी कारखाना के संचालक अपने-अभाव अभियोगों को दरबार तक पहुंचाने में इन्हीं संवाद-लेखकों की सहायता लेते थे। औरंगजेब के कार्यकाल में संवाद-सेवाओं की स्थिति कितनी विकसित थी, इसका विवरण देते हुए एक इतावली यात्री निकोला मेनुकर्की ने लिखा है -

'ये संवाद सामान्यतः बादशाह की उपस्थिति में महल की औरतों द्वारा लगभग रात्रि के 9 बजे पढ़कर सुनाये जाते हैं, ताकि उन्हें यह जानकारी मिल सके कि राज्य में कहा क्या हो रहा है। इसके अतिरिक्त गुप्तचर भी नियुक्त हैं, जिन्हें प्रति सप्ताह महत्वपूर्ण घटनाओं की रिपोर्ट भेजनी होती है, मुख्य रूप से शहजादों की कारगुजारियों के बारे में उनके काम के बारे में। बादशाह आधी रात बीतने तक बैठे रहते हैं, और इस प्रकार खबरें सुनने में मशगूल रहते हैं।"29 लिखित समाचारों का चलन इस प्रकार आगे बढ़ता गया।

हस्तलिखित समाचार-पत्र :

मुगल साम्राज्य के पतन के बाद भी इस तरह के वाकयानवीसों की महिमा न्यूनाधिक रूप से बनी रही। मुग़ल काल में दिल्ली से प्रसारित 'अखबाराते दरबारे मुअल्ला' तथा पूना से निकलने वाले 'पूणे अखबार' तो सुविदित है। 'अखबाराते दरबारे मुअल्लिम' की कुछ हस्तलिखित प्रतियां राजस्थान के पुरालेख विभाग में सुरक्षित है। इन अखबारों में बादशाह की रोजमर्रा की गतिविधियों के विस्तृत समाचार अंकित होते थे।

इसी प्रकार वाकयात को कलमबद्ध करने की परम्परा राजपूत दरबारों में भी मिलती है : भूतपूर्व जयपुर रियासत में एक अलग कार्यालय इस बात के लिए स्थापित था, जो शासकों की दिनचर्या और राज्य की प्रमुख गतिविधियों का लेखा-जोखा रहता था।

ढोल, डोंडी और कबूतर :

दुर्गम स्थलों पर रहने वाले लोग सांकेतिक ढंग से ढोल बजाकर भी सूचना-समाचारों का आदान-प्रदान करते थे। आदिवासी, पर्वतीय या बनवासी जातियों में यह प्रथा अभी तक चली आ रही है।

महत्वपूर्ण राजकीय सूचनाएं सर्व साधारण तक पहुँचाने के लिए भी ढोल का उपयोग किया जाता था। राजकीय संदेश वाहक सार्वजनिक रूप से डोंडी पीट कर लोगों को एकत्र करते और सूचनाएं सुनाते थे। इसी क्रम में नगाड़े का उल्लेख किया जा सकता है। नगाड़े बजाकर लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करके सन्देश दिया जाता था।

पत्र और पर्चियां :

पत्रों और पर्चियों के माध्यम से समाचारों का आदान-प्रदान मध्यकाल में काफी प्रचलित था। उस समय की डाक व्यवस्था सांडनीया घुड़सवार, पैदल हरकारों यहाँ तक कि कबूतरों के द्वारा भी की जाती थी। साधे हुए कबूतरों द्वारा दूर-दूर तक संदेश ले जाने के अनेक रोचक उल्लेख मिलते हैं।

डाक व्यवस्था के माध्यम से भी समाचारों का आदान-प्रदान एक स्थान से दूसरे स्थान तक होता था, इसके प्रमाण मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल से निरन्तर उपलब्ध होते हैं। अकबर के शासनकाल में भी डाक व्यवस्था पर बहुत ध्यान दिया गया और इस माध्यम से भी जनता तक खबरें पहुँचाने में बड़ा महत्वपूर्ण योगदान मिला। ईस्ट इंडिया कम्पनी ने भी अपने प्रारंभिक काल में दरबारों की गोपनीय बातें जानने के लिए इन संवादों के लेखकों की सहायता ली थी।

राजपूत, सिख और मराठा शासकों ने भी अपने आश्रय में इस प्रकार के संवाद लेखक नियुक्त किये थे। इन लोगों की भूमिका युद्ध के समय भी महत्वपूर्ण थी, तो शांति के समय भी। इन्हीं के द्वारा दी गई सूचनाओं के आधार पर युद्धों में जय और पराजय के परिणाम सामने आते थे।

वर्तमान काल :

कम्पनी :

यद्यपि ईस्ट इंडिया कम्पनी सरकार के अधिकारी समाचार-पत्रों के प्रति अत्यधिक शंकालु थे, किन्तु फिर भी पत्रों का सिलसिला आरंभ हुआ और वह समय के साथ गति पकड़ता गया। अधिकारियों की दुर्भावना के बावजूद इंग्लैंड के प्रेस की प्रेरणा से भारत में पत्रकारिता की शुरुआत हुई।

भारतीय पत्रकारिता के उद्भव का श्रेय वस्तुतः इंग्लैंड के प्रेस को जाता है। तटस्थ लेखन और मूल्यांकन का तकाजा यह है कि वह सही बयान करें। इतिहास लेखन की सीमा यह हो गई है कि कुछ लोग सारी विधाओं के विकास में अंग्रेजी साहित्य से रिश्ता जोड़ने में अपना गौरव महसूस कर रहे हैं और इसके ठीक विपरीत कुछ लोग समग्र विधाओं के विकास को भारतीय वाड्मय से जोड़ने में एड़ी-चोटी का पसीना एक कर रहे हैं। ऐसे दोनों ही वर्ग के लेखक अतिवादी हैं और इतिहास को सच्चाई से काटकर गुमराह कर रहे हैं। इतिहास-लेखन वास्तविकता को स्वीकार करना ही ईमानदारी हैं। सच्चाई को सामने लाने की प्रतिबद्धता ही सही लेखन है। इसलिए बगैर किसी पूर्वाग्रह के हमें इस सच्चाई को स्वीकार कर लेना चाहिए कि भारत में पत्रकारिता का आरंभ अंग्रेजो और उनके प्रेस के कारण हुआ।

सन् 1757 में प्लासी युद्ध के बाद बंगाल में ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपना सिक्का जमाया। उसके शासन-सत्ता की भली-भांति स्थापना के दो दशक बाद, "ईस्ट इंडिया कम्पनी की सरकार ने वर्ष 1780 में भारत के प्रथम मुद्रित समाचार-पत्र 'इण्डिया-गजट' का प्रकाशन किया।"30

हिंदी पत्रकारिता का प्रारंभ कोलकाता से हुआ। भारतीय पत्रकारिता की जन्मभूमि बंगाल को मान सकते हैं। कोलकाता में ही पत्रकारिता के जन्म के साथ-साथ उसका विकास भी हुआ। "इसका कारण सन् 1755 में कोलकाता में छपाई की शुरुआत थी। 29 जनवरी सन् 1780 को भारत में पहले समाचार पत्र 'बंगाल गजट एण्ड कलकत्ता जनरल-

एडवरटाइजर' का प्रकाशन कोलकाता में हुई। सबसे पहले भारत में समाचार-पत्र 'बंगाल गजट' निकालने का श्रेय 'जेम्स आगस्टस हिकी' को प्राप्त हैं। इस पत्र का प्रकाशक, जनक और संपादक जेम्स आगस्टस हिकी नामक अंग्रेज था। इसलिए इस पत्र को 'हिकी गजट' के नाम से भी ख्याति प्राप्त हुई। इस 'हिकी गजट' का यह सौभाग्य है कि यह भारतीय समाचार पत्रों का आदि-पुरुष के रूप में सम्मानित हो सका। 'बंगाल गजट' महज दो पृष्ठ का मामूली-सा पत्र था। यह 12 इंच लंबा और 8 इंच चौड़ा तथा दोनों ओर तीन कॉलम की सामग्री लेकर प्रकाशित होता था। इसमें एक विशेष स्तंभ था- 'ए पोएट्स कार्नर' जिसे स्वयं हिकी लिखा करता था। यह एक निर्भीक पत्र था जिसमें कोलकाता में बसे अंग्रेज महाप्रभुओ और यहाँ तक कि तत्कालीन गवर्नर वारेन हेस्टिंग्स की भी निर्भयतापूर्वक आलोचना प्रकाशित होती थी। उनकी भ्रष्टता को उजागर करने वाले इस पत्र को हेस्टिंग्स का कोपभाजन बनना पड़ा। 14 नवम्बर 1780 को उसकी डाक सुविधा छीन ली गई। प्रतिक्रिया स्वरुप हिकी साहब ने सरकारी नीति और भ्रष्टाचार को संरक्षित और विकसित करने के विरुद्ध पत्र में तीखी और कठोर आलोचना आरंभ कर दी। तत्कालीन तंत्र इसे बर्दाश्त न कर सका। हिकी साहब को गिरफ्तार कर लिया गया और उनका मन-प्राण 'बंगाल गजट' का प्रकाशन बंद कर दिया गया। इंडियन डेली न्यूज के नाम से वह पत्र पुनः प्रकाशित होकर देशबंधु चितरंजनदास की संपत्ति बन गया, जो बाद में 'फारवर्ड' नाम से प्रकाशित किया गया।"31

'बंगाल गजट' ने अल्पायु में ही पत्रकारिता की धार की अनुभूति करा दी। भारतीय पत्रकारिता के जनक होने का श्रेय हिकी साहब को निश्चय ही प्राप्त है। "इसके बाद श्री मेसिंक तथा पीटररीड ने नवंबर 1780 में कोलकाता से 'इंडियन गज़ट' नाम से दूसरा नया पत्र निकाला। सन् 1784 में सरकार की ओर से 'कोलकाता-गजट' का प्रकाशन आरम्भ किया गया। फरवरी 1785 में टॉमस जोंस ने 'बंगाल जर्नल' की शुरुआत की। आगे चलकर 1791 ई. में इस पत्र का संपादन-दायित्व अमेरिकन पत्रकार विलियम डुआनी ने संभाल लिया। डुआनी ने 'इंडियन वर्ल्ड' नामक पत्र की भी स्थापना की। स्पष्टवादी और सुलझे हुए

पत्रकार के रूप में श्री डुआनी ने अपनी पहचान बनानी शुरू कर दी तो अंग्रेज सरकार इनसे इतना नाराज हो गई कि इन्हें जलपोत पर बिठाकर भारत से निर्वासित कर दिया।"32

भारतीय पत्रकारिता के आरंभ होते ही उस पर जुल्म की शुरुआत हो गई, लेकिन इसके बावजूद पत्रों का प्रकाशन रुक नहीं सका। दो अंग्रेजों गार्डेन और हे ने सन् 1785 ई. में एक मासिक पत्र 'ओरियंटल मैगजीन' का प्रकाशन कोलकाता से ही शुरू किया। न केवल कोलकाता अपितु चेन्नई भी 12 अक्टूबर 1785 ई. को एक अंग्रेज सज्जन रिचार्ड जॉन्सटन ने 'मद्रास कोरियर' साप्ताहिक पत्र की शुरुआत की। रिचर्ड जॉन्सटन सरकारी मुद्रक थे, इसलिए 'मद्रास कोरियर' पर न केवल कृपा-दृष्टि रही, अपितु सरकार ने इसे इंग्लैंड से छापने की मशीन, टाइप वगैरह मँगाने की सुविधा और सहायता भी दी। सन् 1789 में 'बॉम्बे हेराल्ड' की शुरुआत बम्बई से आरम्भ हुआ। 1790 में यही से 'बांबे कूरियर' की शुरुआत हुई, जो आगे चलकर 'टाइम्स ऑफ इंडिया' के रूप में विख्यात हुआ। सन् 1791 में यही से 'बॉम्बे गजट' नाम से एक और भी पत्र निकलना शुरु हुआ। 1818 में 'दिग्दर्शन', जो बाद में 'समाचार दर्पण' नाम से जाना गया- का प्रकाशन हुआ। सन् 1821 में राजाराममोहन राय ने 'मिरातुल अखबार' निकाला, तो बम्बई से 1838 में 'टाइम्स ऑफ इंडिया', 1868 में 'अमृत बाजार पत्रिका', 1865 में इलाहाबाद से 'पायनियर' 1881 में 'ट्रिब्यून' 1878 में 'हिन्दू' तथा 1923 में 'हिन्दुस्तान टाइम्स' का प्रकाशन शुरू हुआ। बाद में गांधी जी की देखरेख में 'हरिजन' और 'यंग इंडिया' पत्रों का प्रकाशन हुआ। इस शताब्दी के अंत होते-होते बंगाल, चेन्नई और मुंबई से कई अन्य पत्रों का प्रकाशन आरम्भ हुआ।

"अठारहवीं सदी के अंत होते-होते पत्रों के प्रकाशन में उल्लेखनीय गति और सरकार के कारनामों को उजागर होते जाने के कारण अंग्रेजी सरकार (लार्ड वेलेजली) ने 13 मई 1799 को पत्रों के प्रकाशन पर सेंसरसिप लागू कर दिया। ऐसी स्थिति में स्वतंत्र समाचार-पत्रों को अस्तित्व बचाना मुश्किल हो गया। फलतः सरकारी पत्र ही जीवित रह सके। नए पत्रों के प्रकाशन की गति मन्द हो गई। लगभग उन्नीस वर्षों के बाद 19 अगस्त 1813 ई.

में लार्ड हेस्टिंग्स के आने के बाद सेंसरसिप हटने के बाद भारतीय पत्रकारिता की सांस लौटी।"33

भारतीय पत्रकारिता अब-तक अंग्रेजी भाषा में ही विकसित हो रही थी, लेकिन सेंसरसिप हटने के बाद भारतीय भाषा में भी पत्रकारिता का श्रीगणेश हुआ। बंगला भाषा में 1 अप्रैल 1818 में 'दिग्दर्शन' का प्रकाशन जे.सी. मार्शमैन नामक ईसाई ने आरंभ किया। यह पत्र शुरुआती दौर में मासिक था, लेकिन कुछ ही अवधि में सप्ताहिक होने लगा। 1829 में यह अर्द्धसप्ताहिक हो गया। इसमें स्थानीय और विदेशी समाचार बंगला और अंग्रेजी दोनों ही भाषाओं में छपते थे। इस पत्र की सीमा यह थी कि भारतीय धर्म के विरुद्ध यह प्रचार करने के उद्देश्य से ही निकाला गया और कुछ खास-खास लोगों तक इस की प्रतियां भेजी जाती थी।

भारतीयों द्वारा भारतीय भाषा में प्रथम पत्र अगर कोई है तो वह 'बंगाल गजट' हैं। सन् 1816 ईस्वी में ही बांग्ला भाषा में हरीशचंद्र राय और गंगाकिशोर भट्टाचार्य के सहयोग से इस प्रगतिशील पत्र का प्रकाशन आरम्भ हुआ। यह सप्ताहिक पत्र अपने समय में काफी लोकप्रिय था। राजा राममोहन राय ने सन् 1821 में 'संवाद कौमुदी' नाम से बंगला साप्ताहिक पत्र का प्रकाशन किया। 1822 में राजा राममोहन राय ने फारसी में 'मिरातुल अखबार' का प्रकाशन शुरू किया। इसके बाद उन्होंने ही 1929 में 'बंगदूत' का प्रकाशन बंगला, हिंदी,फारसी और अंग्रेजी भाषा में आरंभ किया। इस पत्र को सहयोग दे रहे थे रवि बाबू के पितामह श्री द्वारिका नाथ टैगोर एवं प्रसन्न कुमार टैगोर और संपादन का दायित्व श्री नीलरत्न हलदार निभा रहे थे। भारतीय भाषाओं में बांग्ला के बाद दूसरा स्थान गुजराती भाषा का है। सन् 1822 ई. में फर्दूनजी मर्जबान ने मुंबई से गुजराती भाषा में 'मुंबई समाचार' का प्रकाशन आरंभ किया। सन् 1823 में 'समाचार चंद्रिका', 'जाये जहांनुमा' का छपना शुरू हुआ।

हिन्दी पत्रकारिता : उद्भव और विकास :

हिंदी पत्रकारिता का आरंभ भारत में मुद्रणालय के विकास के बाद ही हुआ। यद्यपि भारत में सबसे पहले मुद्रणालय की स्थापना सन् 1556 में ही हो गई थी। लेकिन इस पर भी विद्वान एकमत नहीं हैं। डॉ. माहेश्वरी सिंह 'महेश' का मानना है कि भारत में पहला प्रेस गोवा में 1550 ई. में और पुनः उसी वर्ष तमिलनाडु में खुला। तीसरा प्रेस 1602 में विपिन कोटा मालावाद में खुला। उक्त प्रेसों की स्थापना ईसाई मिशनरियों ने की थी। सन् 1712 ई. में तनजोर जिले के तिनकोवर स्थान में डेनमार्क के मिशनरियों ने भी अपना प्रेस खोला था। बाद में 1779 ई. में कोलकाता में एक सरकारी प्रेस खोला गया। एक अन्य सूचनानुसार सन् 1755 में कोलकाता में छपाई शुरू हुई थी।

स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान जनमत जागृत करने की दृष्टि से हिन्दी समाचार-पत्रों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। "30 मई 1826 को पं. युगलकिशोर शुक्ल ने देवनागरी लिपि में सबसे पहला पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' (अर्थात् उगता हुआ सूर्य) प्रारम्भ किया।"34 यह एक हिंदी साप्ताहिक अखबार था जिसके प्रकाशन की अभिलाषा सम्पादक पं. जुगलकिशोर शुक्ल को अर्से से रही। कई भाषाओं के अखबार पहले से ही छपते थे एक हिंदी भाषा ही थी जिसके सर्वाधिक पाठक होने के बावजूद हिंदी का कोई अपना अखबार नहीं था। हिंदी भाषी समाज को देश के वर्तमान व ताजे सन्दर्भों, अत्याधुनिक ज्ञान, विज्ञान व सूचनाओं से जोड़ने जैसी महत्वाकांक्षा की बलवती प्रेरणा का ही परिणाम था कि पं. जुगल किशोर शुक्ल द्वारा हिन्दी के प्रथम समाचार-पत्र उदन्त मार्तण्ड का प्रकाशन 30 मई 1826 को आरम्भ हुआ।

उदन्त मार्तण्ड तत्कालीन अन्य समाचार पत्रों के समान ही 12 इंच लम्बा 8 इंच चौड़ा और 4 पृष्ठों का पत्र था। उसके मुखपृष्ठ पर सबसे ऊपर लिखा रहता था।

उदन्त मार्तण्ड

अर्थात्

"दिवकांत कांति विनावांत मंतम न चाप्नातिद वज्य गत्यज्ञ लोक

समाचार सेवामृते तत्त्वमाप्तम् न शक्ति तसमादकरोनीतियत्।

इस श्लोक के नीचे पं. शुक्ल द्वारा रचित छंद प्रकाशित रहता था। यथाः

दिनकर कर प्रगटन यह प्रकाश अठयाम।

ऐसो रवि उगयो महि जेहि तेहि सुख को धाम।।

उत कमलनि विकसित करत बड़त चाव चित वाम।

लेत नाम या पत्र को होत हर्ष ओ काम।।"35

उदन्तमार्त्तण्ड

इस कागज के प्रताएक का इश्तेहार

यह उदंत मार्तण्ड अब पहिले पहले पहल हिन्दुस्तानियों के हित के हेत जो आज तक किसीने नहीं चलाया पर अंगरेजी ओ पारसी ओ बंगले में जो समाचार का कागज छपता है उसका सुख उन बोलियों के जान्ने ओ पढ़ने वालों को ही होता है। और सब लोग पराए सुख सुखी होते हैं जैसे पराए धन धनी होना ओ अपनी रहते पराई आंख देखना वैसही जिस गुण में जिसको पैठ नही उसको उसके रस का स्वाद मिलना कठिन ही है और हिन्दुस्तानियों मे बहुतेरे ऐसे हैं कि पराई चाल देख कर अपनी यहतिक

उदन्त मार्तण्ड का मूल्य प्रति अंक आठ आने और मासिक दो रूपये था जो कि उस समय काफी अधिक था। अधिक मूल्य रखने का मुख्य कारण विज्ञापनों का अभाव था। सरकार कोलकाता के अंग्रेजी, बांग्ला व फारसी भाषा के समाचार पत्रों को विज्ञापन देती थी पर उदन्त मार्तंड के प्रति उपेक्षापूर्ण रवैया रखती थी। अंबिका प्रसाद बाजपेयी के अनुसार पंडित जुगल किशोर शुक्ल ने सरकारी विज्ञापनों के मिलने की आशा से ही पत्र आरम्भ किया था परंतु जब विज्ञापन नहीं मिले तो वह अस्तांचल की ओर बढ़ने लगा। हिंदी

का वह पहला समाचार पत्र अपने पाठकों के प्रति कितना ईमानदार था इसका अनुमान उसके समापन 79वें अंक 4 दिसंबर 1827 में पं. जुगल किशोर द्वारा की गई घोषणा से लगाया जा सकता है। जिससे पता चलता है कि इस पत्र का अंत उसी अंक से हो गया। वह नोट इस प्रकार है -

"आज दिवस लौं उग चुक्यों मार्तंड उदन्त।

अस्ताचल को जात है दिनकर-दिन अब अंत।।"36

इस अखबार की स्मृति में प्रकाशनारम्भ की तारीख 30 मई को भारत सरकार ने हिंदी पत्रकारिता दिवस घोषित किया है, इस तिथि को देश स्तर पर हिंदी पत्रकारिता से जुड़े तमाम प्रख्यात पत्रकारों को स्मरण किया जाता है और पत्रकारिता के गौरवशाली इतिहास की चर्चा की जाती है।

प्रकाशन का मूल उद्देश्य था कि हिन्दी भाषी समाज को मानसिक परावलम्बन से मुक्ति दिलाकर उन्हें इस योग्य बनाना कि वे अपने व अपनी सन्तति को स्वतंत्र चिन्तन जैसी दिव्य दृष्टि प्रदान कर राष्ट्र की मुख्य धारा से जोड़ सके।

हिंदी पत्रकारिता का काल-विभाजन :

हिन्दी पत्रकारिता का काल-विभाजन निम्न चरणों मे किया जा सकता हैं -

- उद्भव (आरम्भिक) काल - (सन् 1826 से 1867)
- भारतेंदु युग/ विकास काल - (सन् 1867 से 1900)
- द्विवेदी युग/ उत्थान काल - (सन् 1900 से 1920)
- छायावाद युग/गाँधी काल - (सन् 1920 से 1947)
- स्वातंत्र्योत्तर काल - (सन् 1947 से अब तक)

हिन्दी पत्रकारिता का उद्भव काल (1826-1867) :

पत्र-पत्रिकाओं का सम्बन्ध सीधे जन-जागरण से है। किसी प्रकार के अन्याय या पक्षपात का प्रतिकार करने के लिए जनता जब उठ खड़ी होती है, तो उसे अपनी आवाज बुलन्द करने के लिए पत्र-पत्रिकाओं का सहारा लेना पड़ता है। उन दिनों जन-जागरण का केन्द्र कोलकाता नगर था। हिंदी पत्रकारिता का आरम्भ वहीं से हुआ।

हिन्दी के प्रथम समाचारपत्र 'उदन्त मार्तण्ड' का प्रकाशन 30 मई 1826 को कलकत्ता से हुआ। जो एक साप्ताहिक पत्र था, जिसके जन्मदाता श्री युगल किशोर शुक्ल थे, इस पत्र के संपादक, मुद्रक और मैनेजर श्री मन्ना ठाकुर थे। उदंत का अर्थ समाचार होता है। श्री युगल किशोर कानपुर उत्तर प्रदेश के निवासी थे परन्तु यह पत्र उन्होंने कलकत्ता से ही निकाला। 'उदन्त मार्तण्ड' 1 वर्ष 7 महीने तक प्रकाशित हुआ। प्रत्येक मंगलवार को प्रकाशित होता था। इस समाचार-पत्र में सभी प्रकार की खबरें यथा- बाज़ार दर, हिन्दुस्तान की खबर, नये सरकारी कानून, गवर्नर जनरल के विचरण के साथ-साथ विज्ञापन भी दिए जाते थे। आर्थिक तंगी के कारण 11 दिसंबर 1827 को हमेशा के लिए इसका प्रकाशन बन्द हो गया।

उदंत मार्तंड के बाद हिन्दी का दूसरा समाचार पत्र 10 मई 1829 ईसवीं को 'बंगदूत' प्रकाशित हुआ। यह भी साप्ताहिक पत्र था। इस पत्र के मूल प्रेरक और संचालक राजा राममोहन राय थे। इसके प्रथम संपादक नील रतन हलदार थे। यह प्रत्येक रविवार को प्रकाशित होता था, 11-12 अंको के प्रकाशन के बाद राजा राममोहन राय ने इससे अपना नाता तोड़ लिया और 30 जुलाई 1829 ई. को इसका प्रकाशन बन्द हो गया।

कलकत्ता बहुत दिनों तक हिंदी पत्रकारिता का केन्द्र बना रहा। 1857 में वहां से कई पत्र प्रकाशित हुए, जिसमे 'बंगदूत' 'प्रजामित्र' 'साम्यदंत मार्तण्ड' तथा 'समाचार सुधावर्षण' प्रमुख थे।

हिंदी-प्रदेश से प्रकाशित होने वाला प्रथम हिंदी पत्र वस्तुतः 'बनारस अखबार' था। हिन्दी पत्रकारिता का दूसरा महत्वपूर्ण क्षेत्र काशी था। हिंदी प्रदेशों में सबसे पहले समाचार

पत्रों का प्रकाशन काशी में हुआ। काशी हिंदी का मुख्य केंद्र तो था ही, पत्रकारिता का भी मुख्य केंद्र था। काशी से जो पहला सप्ताहिक पत्र सन् 1845 में प्रकाशित हुआ, वह 'बनारस अखबार' था, जिसके संपादक गोविंद रघुनाथ थत्ते थे। जिसे राजा शिवप्रसाद 'सितारेहिंद' ने शुरू कराया था, राजा साहब हिंदुस्तानी के प्रबल समर्थक थे। इस अखबार में अरबी-फारसी के शब्दों का अधिकांशतः प्रयोग किया जाता था, इसलिए इस अखबार की भाषा को लेकर खूब आलोचना हुई।

काशी से ही सन् 1850 में दूसरा पत्र 'बनारस सुधाकर' प्रकाशित हुआ। इसके सम्पादक एवं प्रकाशक श्री तारामोहन मैत्रेय थे। तीन वर्ष तक यह पत्र बंगाली और हिंदी दोनों भाषाओ में प्रकाशित होता था, लेकिन 1853 से यह शुद्ध हिन्दी मे ही प्रकाशित होने लगा। इस भाषिक दृष्टि के कारण ही इसे हिन्दी-प्रदेश के प्रथम पत्र की संज्ञा दी जाती है। सन् 1852 में आगरा से 'बुद्धि प्रकाश' का प्रकाशन हुआ, इसके सम्पादक मुंशी सदासुखलाल थे। इस अखबार के लेखों की स्तरीयता और भाषिक गुणवत्ता की प्रशंसा आचार्य शुक्ल ने की हैं।

हिन्दी का पहला दैनिक समाचार पत्र 'समाचार सुधावर्षण' सन् 1854 में कलकत्ता से प्रकाशित हुआ। इसके संपादक श्री स्यामसुंदर सेन थे। यह पत्र हिन्दी और बंगला में प्रकाशित हुआ। यह पत्र करीब 14 वर्षों तक प्रकाशित हुआ। राजा लक्ष्मण सिंह का पत्र 'प्रजाहितैषी' सन् 1855 से 1857 तक और पुनः 1961 से प्रकाशित हुआ। 'पयामे आज़ादी' फ़रवरी, 1857 में दिल्ली से प्रकाशित होने वाला समाचार पत्र था। यह अखबार हिंदी, उर्दू और मराठी में निकलता था। इस समाचार पत्र का प्रकाशन प्रसिद्ध क्रांतिकारी अजीमुल्ला ख़ाँ ने किया था। इस पत्र के प्रकाशक एवं मुद्रक नवाब बहादुरशाह जफ़र के पौत्र केदार बख़्त थे। पहले यह यह समाचार पत्र उर्दू में निकाला गया और बाद में हिन्दी में भी इसका प्रकाशन हुआ। 'पयामे आज़ादी' में अंग्रेज़ सरकार के विरुद्ध सामग्री होती थी, पत्र ने दिल्ली की जनता में स्वतंत्रता की अग्नि को फैलाया। इसी पत्र में भारत का तत्कालीन राष्ट्रीय गीत भी छपा था, इस अखबार में लिखा उनका एक गीत आगे चलकर 1857 के विद्रोहियों का झंडा गीत बना। जिसकी कुछ पंक्तियाँ निम्नलिखित थीं-

“हम हैं इसके मालिक, हिंदुस्तान हमारा।
पाक वतन है कौम का, जन्नत से भी प्यारा।।
आज शहीदों ने तुमको, अहले वतन ललकारा।
तोड़ो, ग़ुलामी की जंजीरें, बरसाओ अंगारा।।“37

-अज़ीमुल्ला खान

अहमदाबाद से मासिक 'धर्मप्रकाश' का प्रकाशन 1859 ई. में मनसुख लाल के संपादन में हुआ। जो धार्मिक एवं जातीय पत्रिका थी। इसी पत्रिका का सनातन धर्म सभा ने 1867 ई. में आगरा से हिंदी और संस्कृत भाषा में प्रकाशन प्रारंभ किया, फिर ज्वाला प्रसाद के संपादन में 1890 ई. में यह पत्रिका रुड़की से उर्दू और संस्कृत भाषा में प्रकाशित होने लगी।

उल्लेखनीय है कि 1857 के स्वतंत्रता संग्राम में कुछ पत्रों ने अपनी बेहतरीन भूमिका से स्वतंत्रता आंदोलन की धार तेज करने में अभूतपूर्व योगदान दिया। खासकर हिंदी का पहला दैनिक समाचार पत्र 'समाचार सुधावर्षण' और दिल्ली से प्रकाशित 'पयामे आजादी' का इस दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थान है। इन पत्रों को तत्कालीन अंग्रेज सरकार का कोपभजन बनना पड़ा। दूसरी ओर कुछ पत्रों ने सामाजिक रूढ़ियों के विरुद्ध जनजागरण में अपनी भूमिका निर्वाहित की। भारतीय जनमानस गहरी नींद में सोया हुआ था, उसे झकझोर कर जगाने का काम उद्भव काल की पत्रकारिता ने ही किया। भारतीय पत्रकारिता के उस आरम्भिक युग में पत्रकारिता का उद्देश्य जनमानस में जागरूकता पैदा करना था। आरम्भिक काल में प्रकाशित कुछ प्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ इस प्रकार हैं –

क्र. सं.	सन्	पत्र का नाम	संपादक/प्रकाशक	स्थान	भाषा
1.	30 मई 1826	उदन्त मार्तण्ड	पं. युगल किशोर शुक्ल	कोलकाता	हिंदी
2.	10 मई 1829	बंगदूत	श्री राजा राममोहन राय	कोलकाता	हिंदी

3.	1830	सद्धर्मप्रचारक	जे. पी. चौधरी काव्यतीर्थ	काशी	हिंदी
4.	जून 1834	प्रजामित्र	अनिश्चित	काशी	हिंदी
5.	जून 1845	बनारस अखबार	शिवप्रसाद सिंह	काशी	हिंदी
6.	11 जून 1846	मार्तण्ड	नसीरुद्दीन	कोलकाता	बांग्ला, हिंदी, उर्दू, फ़ारसी
7.	1846	ज्ञानदीप	प्र. अली	कोलकाता	......
8.	1 जनवरी 1848	शिमला अखबार	शेख़ अब्दुल्ला	शिमला	हिंदी, उर्दू
9.	1848	मालवा अखबार	प्रेमनारायण	इंदौर	हिंदी, मराठी
10.	1849	जगद्वीप भास्कर	......	कोलकाता	हिंदी, बांग्ला
11.	1850	साम्यदण्ड भास्कर	युगल किशोर शुक्ल	कोलकाता	हिंदी
12.	1850	सुधाकर	सं. तारामोहन मिश्र	काशी	हिंदी
13.	1850	सामदण्ड मार्तण्ड	सं. तारामोहन मिश्र	कोलकाता	हिंदी
14.	1850	मज़हरूल सरूर	भरतपुर दरबार का मुखपत्र	भरतपुर	हिंदी, उर्दू
15.	1852	बुद्धि प्रकाश	मुंशी सदासुखलाल	आगरा	हिंदी
16.	1854	समाचार सुधा वर्षण	श्यामसुंदर सेन	कोलकाता	हिंदी (दैनिक)
17.	1855	प्रजा हितैषी	राजा लक्ष्मण सिंह	आगरा	हिंदी
18.	1856	राजपूताना अखबार	....	जयपुर	हिंदी
19.	1861	जगलाम चिन्तक	......	अजमेर	हिंदी
20.	1863	जगहित कारक	......	अजमेर	हिंदी
21.	1865	तत्त्वबोधिनी पत्रिका	....	बरेली	हिंदी
22.	1867	वृत्तांत विलास	....	जम्मू	हिंदी (मासिक)
23.	1867	ज्ञान प्रदायिनी पत्रिका	नवीनचंद्र राय	लाहौर	हिंदी (मासिक)

हिन्दी पत्रकारिता का भारतेन्दु काल (1867-1900) :

भारतेंदु काल को हिन्दी पत्रकारिता के विकास का दूसरा उत्थान माना जा सकता है। इस युग की पत्रकारिता का केंद्रीय स्वर जनजागरण है, किसी प्रकार के अन्याय या पक्षपात का प्रतिकार है, मातृभूमि स्वदेशी वस्तुओं का व्यवहार, गोरक्षा, बल-विवाह निषेध,

शिक्षा-प्रसार, मद्य-निषेध, भ्रूण हत्या की निंदा का उद्बोधन है। उद्भव काल के प्रथम दौर में हिंदी पत्रकारिता का मुख्य केंद्र कोलकाता बना हुआ था, लेकिन इसके अंतिम चरण में हिंदी पत्रकारिता ने हिंदी प्रदेशों में अपना विस्तार आरंभ कर दिया। हिंदी पत्रकारिता बनारस, आगरा, ग्वालियर, भरतपुर, इटावा, सिकंदरा, शिमला, शाहजहाँपुर, बरेली, अहमदाबाद से लेकर लाहौर तक अपना परचम लहराने लगी। कई श्रेष्ठ राजनीतिक और साहित्यिक एवं धार्मिक पत्रों का प्रकाशन आरम्भ हुआ। इसी दौर में भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में प्रवेश किया और राजनीति, समाजिक और साहित्यिक क्षेत्र को सकारात्मक दिशा और दृष्टि दी। "यह समय अंग्रेज अधिकारियों के सामने हाथ जोड़े रहने का था परंतु भारतेंदु निडर भाव से राजनीतिक लेख लिखकर जनता जनार्दन को झकझोर रहे थे। इस प्रकार यह कहना अतिशयोक्ति न होगी कि भारतेंदु को हिन्दी पत्रकारिता में वही स्थान मिलना चाहिए, जो राजा राममोहन राय का है।"38 भारतेन्दु ने इस युग मे अकेले चार पत्रिकाएँ निकली। अंग्रेजों की शोषण-नीति का खुलासा करते भारतेंदु जी लिखते हैं -

"भीतर-भीतर सब रस चूसै, हँसि-हँसि के तन मन धन मूसै।
जाहिर बातन में अतितेज, क्यों सखि साजन! नहि अँगरेज।।"39

भारतेन्दु हरिशचंद्र द्वारा सम्पादित 'कवि वचन सुधा' एक हिन्दी समाचार-पत्र था। इसका प्रकाशन 15 अगस्त 1867 को काशी से आरम्भ हुआ जो एक क्रांतिकारी घटना थी। यह कविता-केन्द्रित पत्र था। इस पत्र ने हिन्दी साहित्य और हिन्दी पत्रकारिता को नये आयाम प्रदान किए। हिन्दी के महान समालोचक डॉ. रामविलास शर्मा का ऐसा मानना है कि- कवि वचन सुधा का प्रकाशन करके भारतेन्दु ने एक नए युग का सूत्रपात किया।

आरम्भ में भारतेन्दु 'कवि वचन सुधा' में पुराने कवियों की रचनाएँ छापते थे, जैसे चंद बरदाई का रासो, कबीर की साखी, जायसी का पद्मावत, बिहारी के दोहे, देव का अष्टयाम और दीनदयालु गिरि का अनुराग बाग। लेकिन शीघ्र ही पत्रिका में नए कवियों को भी स्थान मिलने लगा। पत्रिका के प्रवेशांक में भारतेन्दु ने अपने आदर्श की घोषणा इस प्रकार की थी -

"खल जनन सों सज्जन दुखी मति होंहि, हरिपद मति रहै।

अपधर्म छूटै, सत्व निज भारत गहै, कर दुख बहै।।

बुध तजहि मत्सर, नारिनर समहोंहि, जगआनंद लहै।

तजि ग्राम कविता, सुकविजन की अमृतवानी सब कहै।"40

'कवि वचन सुधा' में साहित्य तो छपता ही था, उसके अलावा समाचार, यात्रा, ज्ञान-विज्ञान, धर्म, राजनीति और समाज नीति विषयक लेख भी प्रकाशित होते थे। इससे पत्रिका की जनप्रियता बढ़ती गई। लोकप्रिया इतनी कि उसे मासिक से पाक्षिक और फिर साप्ताहिक कर दिया गया। प्रकाशन के दूसरे वर्ष यह पत्रिका पाक्षिक हो गई थी और 5 सितंबर, 1873 से साप्ताहिक। इस पत्र ने संस्कृत के तत्सम बहुल शब्दों या उर्दू-फारसी बहुल शब्दों के प्रयोग के बजाय हिंदी भाषा के लिए तद्भव शब्दों को प्राथमिकता देकर एक मध्यम मार्ग का अनुसरण किया। हिंदी भाषा के रूप को स्थिर करने और विचारों की स्वतंत्रता को महत्व देने के कारण इस पत्र की भूमिका महत्वपूर्ण मानी जाती है। 'कवि वचन सुधा' आरम्भ में सिर्फ महत्वपूर्ण कविताओं को प्रकाशित करता था, लेकिन बाद में इसमें राजनैतिक और सामाजिक लेखों का प्रकाशन शुरू करके भारतेंदू ने समय-सत्य की मांग के साथ न्याय किया।

भारतेंदु हरिश्चंद्र वर्तमान हिंदी के जनक कहे जाते हैं। उन्होंने उस समय भाषा का जो रूप निर्धारित किया था, वही स्वरूप लगभग 75 वर्षों तक चलता रहा। आज भी हम उसी भाषा को मूल आधार मानते हैं। जिन दिनों "कवि वचन सुधा" का प्रकाशन हुआ उसके बहुत बाद कई पत्र निकलने शुरू हुए थे। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने स्वयं 15 अक्टूबर 1873 में 'हरिश्चंद्र मैगजीन' निकाली। यह मासिक पत्रिका थी, जिसका जून 1874 में नाम बदलकर 'हरिश्चंद्र चंद्रिका' कर दिया और सन् 1880 में इसका विलय 'मोहनचंद्रिका' में कर दिये। जनवरी 1874 में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने 'बाल बोधिनी' का प्रकाशन किया, जो प्रमुख रूप से नारी-जागृति के लिए संकल्पित था। हिंदी भाषा की यह महिलाओं की पहली पत्रिका थी। तीनों पत्रिकाओं में सर्वाधिक महत्वपूर्ण 'कवि वचन सुधा' ही मानी जाती है। इस पर रामविलास शर्मा ने टिप्पणी करते हुए कहा है कि- "'कवि वचन सुधा' का प्रकाशन

करके भारतेंदु ने वास्तव में नए युग का सूत्रपात किया। पत्र-पत्रिकाओं ने हमारे जातीय-जीवन को पहले कभी इतना प्रभावित न किया था और कोई भी पत्रिका हिंदी की चोटी के लेखकों को प्रभावित करने का ऐसा निरपवाद श्रेय नहीं ले सकती जैसे 'कवि वचन सुधा'।"41 भारतेंदु ने अपने पत्रों में स्थानीय समाचार देकर आम जनता से जुड़ने और उनकी जरूरतों को उजागर करने का काम भी किया।

भारतेंदु जी का नाम पत्रकारिता के क्षेत्र में सदैव याद रखा जायेगा। भारतेन्दु जी से प्रभावित होकर कई पत्र-पत्रिकाएं निकलने लगी थीं। भारतेंदु हरिश्चंद्र ने हिंदी पत्रकारिता में कई नई विधाओं का प्रारंभ किया। वे निबंध के जनक थे। जिसे बाद में बालकृष्ण भट्ट तथा प्रताप नारायण मिश्र ने अपने विचारों को प्रकट करने का एक सशक्त माध्यम बनाया। अपने निबन्धों के माध्यम से पत्र-पत्रिकाओं में अंग्रेजी शासन पर व्यंग भी किये। सभी गंभीर विचार निबन्धों के माध्यम से कहे जाने लगे। जीवनियां भी पत्रों में छपने लगी। भारत के वीरो के प्रेरणादायक प्रसंगों को भी पत्रों में स्थान दिया जाने लगा, ताकि नव-जागरण लाया जा सके। इसी समय में कहानियों और लघु उपन्यासों का प्रवेश भी पत्रों में हुआ। भारतेंदु जी द्वारा निकाले जाने वाली पत्र-पत्रिकाओं में इन्हें प्रकाशित किया जाता। भारतेंदु हरिश्चंद्र के मित्र प्रताप नारायण मिश्र ने कानपुर से 'ब्राह्मण' पत्र निकाला। 1883 में 'ब्राह्मण' का प्रकाशन हुआ और इसके दो वर्ष बाद भारतेन्दु हरिश्चन्द्र भी नहीं रहे लेकिन आज भी हम इन पत्रकारों को अपने बीच ही पातें हैं।

हिंदी पत्रकारिता का क्षेत्र हिंदी प्रदेशों में धीरे-धीरे ही सही विस्तृत होने लगा। हिंदी क्षेत्रों में हिंदी-पत्रकारिता के विस्तार के बावजूद कोलकाता हिंदी पत्रकारिता के विकास में योगदान देता रहा। यही से सन् 1872 में कार्तिक प्रसाद खत्री ने 'दीप्ति प्रकाश' निकाला जो अल्पजीवी सिद्ध हुआ, लेकिन मार्च 1873 में यही से पंडित केशवराम भट्ट ने अपने संपादन 'बिहार-बंधु' का प्रकाशन आरम्भ किया। 1 मार्च 1874 में पटना से प्रकाशित साप्ताहिक पत्र था। यह बिहार का पहला पत्र था जो लगातार 50 वर्षों तक हिंदी भाषा, बिहारियों और भारतीयों की सेवा में प्रमुख स्थान बनाये रखने में सफल रहा। इसने अनेक हिंदी लेखकों को पैदा किया। हिन्दी प्रवर्ध्दिनी सभा, काशी से पं. बालकृष्ण भट्ट के सम्पादन

में 1 सितम्बर 1877 को 'हिन्दी प्रदीप' मासिक का आरम्भ हुआ। 'हिंदी प्रदीप' हिंदी भाषा और देवनागरी का समर्थक था।

भारतेंदु युग की पत्रकारिता का विकास कई दिशाओं में होता गया। सामाजिक, राजनीतिक और साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं के अतिरिक्त विविध धर्मों और जाति से संबंध पत्रिकाओं की संख्या भी निरंतर बढ़ती गई। धार्मिक पत्र वैसे तो पहले से निकल रहे थे लेकिन इस प्रवृत्ति ने और ज्यादा जोर पकड़ा। शाहजहांपुर से आर्य दर्पण (1979) के अतिरिक्त आर्य समाज की कई पत्रिकाएँ प्रकाशित होती चली गई। धार्मिक पत्रकारिता की देखा-देखी हिन्दूओं ने भी इस दिशा में अपनी सक्रियता दिखलाई। फलतः 1875 में 'धर्म पत्रिका' प्रयास से और यहीं से 1877 में 'धर्म पत्र' निकला।

जाति-आधारित पत्रकारिता की शुरुआत का श्रेय सन् 1878 में प्रकाशित 'कायस्थ समाचार' को प्राप्त है, इसी प्रकार ब्राह्मण जातियों के विकास की चिंता से सम्बद्ध 'ब्राह्मण समाचार' 1890 जैसी पत्रिकाएँ सामने आयी। इनका जाति-विशेष के ही प्रचार-प्रसार पर केंद्रित रहा। आगरा से बाबू कन्हैया सिंह ने 'जाट समाचार' सन् 1889 में प्रकाशित किया।

भारतेन्दु युग तक वस्तुतः दैनिक पत्रों की संख्या अत्यंत सीमित ही रही। 'समाचार सुधावर्षण (1896) जैसे चार-पाँच दैनिक अखबारों ने ही अपनी सार्थकता प्रमाणित की, शेष निकले भी तो अल्पजीवी ही रहे। हिन्दी-पत्रकारिता ने उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम दो दशकों में अपने को इतना मजबूत कर लिया कि यह न केवल हिन्दी भाषी प्रदेशों में अपितु दक्षिण भारत सहित विदेशों में भी अपने पैर जमा लिये। इसने साहित्य, राजनीति, धर्म, दर्शन, जाति, बालपयोगी और महिलापयोगी विषयों को आत्मसात कर अपनी महत्ता प्रमाणित कर और द्विवेदी युगीन पत्रकारिता का मार्ग प्रशस्त कर दिया।

समाचार पत्रों के इतिहास की इस नवजागरण काल में हिंदी समाचारपत्रों का अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व प्राप्त हुआ। एक आँकड़ा के अनुसार इस काल में लगभग दो सौ साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं ने पत्रकारिता को पुष्ट और प्रौढ़ किया, जिनमें से कुछ इस प्रकार देखा जा सकता है -

क्र. सं.	पत्र का नाम	संपादक	स्थान	मासिक/पाक्षिक	सन्
1.	कवि वचन सुधा	भारतेंदु हरिश्चंद्र	काशी	मासिक, पाक्षिक, साप्ताहिक	1868
2.	समय विनोद	बद्रीदत्त ज्योतिर्विद	नैनीताल	पाक्षिक	1869
3.	उदय गजट	मुंशी नवल किशोर	उदयपुर	मासिक	1869
4.	जगत समाचार	......	आगरा	साप्ताहिक	1869
5.	बुद्धि विलास	......	जम्मू	मासिक	1870
6.	ज्ञान प्रकाश	मुंशी नवल किशोर	कानपुर	साप्ताहिक	1870
7.	सुलभ समाचार	......	कलकत्ता	साप्ताहिक	1871
8.	अल्मोड़ा अखबार	मुंशी सदानन्द सनवात	अल्मोड़ा	साप्ताहिक	1871
9.	बिहार बन्धु	केशव राम भट्ट	बांकीपुर	मासिक	1871
10.	हिंदी दीप्ति प्रकाश	कार्तिक प्रसाद खत्री	कलकत्ता	साप्ताहिक	1872
11.	श्री हरिश्चंद्र चंद्रिका	भारतेंदु हरिश्चंद्र	काशी	मासिक	1873
12.	हरिश्चंद्र मैगज़ीन	भारतेंदु हरिश्चंद्र	काशी	मासिक	1873
13.	प्रिंस ऑफ वेल्स	....	मुरादाबाद	साप्ताहिक	1873
14.	चारणादि चन्द्रिका	जयराम	काशी	मासिक	1873
15.	बाल बोधिनी	....	काशी	मासिक	1874
16.	भारत बंधु	तोताराम वर्मा	अलीगढ़	साप्ताहिक	1874
17.	सदादर्श	श्री निवास दास	दिल्ली	साप्ताहिक	1874
18.	भागवत भक्तितोषिणी	....	काशी	साप्ताहिक	1874
19.	सकल सम्बोधिनी	सरदार संतोष सिंह	अमृतसर	मासिक	1875
20.	नीति प्रकाश	कन्हैया लाल	लुधियाना	मासिक	1875
21.	आनंद लहरी	धीरज शास्त्री	काशी	साप्ताहिक	1876
22.	काशी पत्रिका	बालेश्वर प्रसाद	काशी	साप्ताहिक	1876
23.	सुदर्शन समाचार	मुरलीधर	प्रयाग	मासिक	1876
24.	हिंदी प्रदीप	बालकृष्ण भट्ट	प्रयाग	मासिक	1877
25.	नागरी पत्रिका	सदासुख लाल	प्रयाग	मासिक	1877
26.	मित्र विलास	पं. मुकुंद लाल	लाहौर	साप्ताहिक	1877
27.	ज्ञानचंद्र	रतननाथ	प्रयाग	साप्ताहिक	1878

28.	भारत मित्र	....	कलकत्ता	दैनिक,पाक्षिक	1878
29.	सज्जन विनोद	कृष्ण लाल	आगरा	साप्ताहिक	1878
30.	आर्यमित्र	......	कशी	मासिक	1878
31.	जयपुर गज़ट	महेंद्र नाथ सेन	जयपुर	मासिक	1878
32.	सारसुधानिधि	सदानंद मिश्र	कलकत्ता	साप्ताहिक	1879
33.	सज्जन कीर्ति	महाराणा सज्जन सिंह	उदयपुर	साप्ताहिक	1879
34.	उचितवक्ता	दुर्गाप्रसाद मिश्र	कलकत्ता	साप्ताहिक	1880
35.	क्षत्रिय पत्रिका	बाबू रामदीन सिंह	बांकीपुर	मासिक	1880
36.	प्रयाग समाचार	देवकी नंदन तिवारी	प्रयाग	मासिक	1882
37.	सदाचार मार्तंड	पं. लालचंद्र शास्त्री	जयपुर	मासिक	1883
38.	इन्द्रप्रस्थ प्रकाश	जयंती प्रसाद शर्मा	दिल्ली	मासिक	1883
39.	काशी समाचार	बिहारी सिंह	काशी	मासिक	1883
40.	दिनकर प्रकाश	रामदास वर्मा	लखनऊ	मासिक	1883
41.	भारत जीवन	रामकृष्ण वर्मा	काशी	साप्ताहिक	1884
42.	हिंदुस्तान	राजा रामपाल सिंह	कालाकांकर	दैनिक	1885
43.	विद्या विलास	दुर्गाप्रसाद मिश्र	कलकत्ता	मासिक	1885
44.	रसिक पंच	बालभद्र मिश्र	प्रयाग	मासिक	1886
45.	प्रयाग मित्र	देशोपकारक प्रेस	प्रयाग	पाक्षिक	1887
46.	भारतवर्ष	राम नारायण वाजपेयी	बिठूर कानपुर	मासिक	1889
47.	प्रजा हितैषी	राम नारायण वाजपेयी	जबलपुर	मासिक	1889
48.	सुगृहिणी (स्त्री पत्र)	हेमंत कुमारी चौधरी	शिलांग	मासिक	1889
49.	भारत दर्पण	विष्णुनाथ ब्रह्मचारी	कलकत्ता	साप्ताहिक	1889
50.	राजस्थान समाचार	मुंशी समर्थदान	अज़मेर	मासिक	1889
51.	जयपुर समाचार	अमर नारायण माथुर	जयपुर	साप्ताहिक	1890
52.	हिंदी बंगवासी	अमृत लाल चक्रवर्ती	कलकत्ता	साप्ताहिक	1890
53.	विद्या प्रकाश	रामनारायण	लखनऊ	मासिक	1891
54.	भारत भूषण	बाबू गोपाल राम	मुंबई	मासिक	1892
55.	सरस्वती प्रकाश	बनवारी लाल	काशी	मासिक	1892
56.	न्याय पत्र	विद्यावर्द्धिनी सभा	प्रयाग	मासिक	1894

57.	सर्व हितैषी	पं.रामस्वरूप बनवारी	मुरादाबाद	मासिक	1894
58.	संसार दर्पण	पं. अयोध्या प्रसाद	झाँसी	मासिक	1895
59.	नागरी प्रचारिणी पत्रिका	श्यामसुंदर दास	काशी	मासिक	1896
60.	प्रताप	श्री ज्वाला प्रसाद	अलीगढ	साप्ताहिक	1896
61.	भारतोपदेशक	ब्रह्मानंद सरस्वती	मेरठ	मासिक	1897
62.	भारत मार्तंड	पं. रामाकिरण शर्मा	जोधपुर	साप्ताहिक	1898
63.	देश हितकारी	......	मेरठ	मासिक	1899
64.	सरस्वती	श्यामसुंदर दास	प्रयाग	मासिक	1900
65.	काव्य सुधानिधि	राम भरोसे शर्मा	काशी	मासिक	1900
66.	बड़ा बाज़ार गजट	बाबू राम लाल	कलकत्ता	साप्ताहिक	1900

हिन्दी पत्रकारिता का द्विवेदी काल (1900-1920) :

"देश भक्त वीरों, मरने से नेक नहीं डरना होगा।
प्राणों का बलिदान देश की वेदी पर करना होगा।।"42

बीसवीं शताब्दी भारतीय पत्रकारिता के लिए अत्यंत शुभ रही। इसके प्रारंभ में (जनवरी 1900 में) 'सरस्वती' के प्रथम अंक का प्रकाशन एक ऐतिहासिक घटना हैं तथा हिन्दी पत्रकारिता में एक नये युग का श्रीगणेश हुआ। नागरी प्रचारिणी सभा की साहित्यिक गतिविधियों से प्रभावित होकर प्रयाग के इंडियन प्रेस ने हिंदी में 'सरस्वती' मासिक पत्रिका का प्रकाशन आरंभ किया। 'सरस्वती' में राष्ट्रीय चेतना जगाने के लिए सांस्कृतिक चेतना पर अनेक लेख छापे गए। जैसे वेद क्या है, संस्कृत क्या है?

काशी नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा अनुमोदित इसके सम्पादक श्री बाबू श्यामसुंदर दास व प्रकाशक चिंतामणि घोष थे। इस मासिक पत्रिका के प्रथम अंक ने ही अपनी

मौलिकता से साहित्यिक पत्रकारिता की समझ और दिशा बदल दी। सन् 1903 में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने इसके संपादन का दायित्व लिया तो हिन्दी पत्रकारिता की आधुनिक संपादन कला की शुरुआत हुई। निराला जी जैसे व्यक्ति ने इस पत्रिका के कारण न केवल हिन्दी सीखी, बल्कि हिन्दी-कविता के सिरमौर भी बने। द्विवेदी जी ने सत्रह वर्षों तक 'सरस्वती' का संपादन किया। अपने पांडित्य, कार्यदक्षता और परिश्रम के बल पर इसे अभूतपूर्व बना दिया। इस युग में कोलकाता से पूर्व प्रकाशित 'भारत मित्र' यदि राजनीति जागरण का शंखनाद कर रहा था तो 'सरस्वती' साहित्यिक और सांस्कृतिक मंच को उत्तरोत्तर प्रगति प्रदान कर रही थी। डॉ वेद प्रताप वैदिक ने इन दोनों पत्रों की भूमिका के संबंध में लिखा है- "स्वाधीनता के पहले तक की हिंदी पत्रकारिता 'भारत मित्र' और 'सरस्वती' इन दो समांतर धाराओं का अनुसरण करती रही। 20वीं शताब्दी के पहले 47 वर्षों में जितने भी पत्र प्रकाशित हुए, उन्हें दो धाराओं में विभक्त किया जा सकता हैं। भारत मित्र की तरह अनेक प्रखर राजनीतिक प्रचारक, जुझारू तथा तेजस्वी पत्र प्रायः हर प्रान्त से निकले तथा 'सरस्वती' की भांति साहित्य की श्रीवृद्धि और भाषा का श्रृंगार करने वाले पत्र भी हिंदी, अहिंदी क्षेत्रों और विदेशों से निकले।"43 साहित्यिक, सामाजिक नव जागरण, राष्ट्रीय चेतना और आजादी का अलख जगाने वाले पत्र भी निकले तथा धार्मिक, सांप्रदायिक, जातिगत, नारी-सुधार, आरोग्य इत्यादि विषयक पत्रकारिता की प्रवृत्तियाँ भी बढ़ती गई। यह बात दूसरी है कि द्विवेदी युग मात्र 20 वर्षों का कालखंड था। इसलिये इस युग में पत्र-पत्रिकाओं की संख्या भी अपेक्षाकृत सीमित रही।

हिन्दी पत्रकारिता का गाँधी काल (1920-1947) :

कांग्रेस ने देश की आजादी के लिए महात्मा गाँधी का नेतृत्व स्वीकार कर लिया और गांधी जी ने हिंदी को देश की एकसूत्रता के लिए आवश्यक घोषित किया और इसे राष्ट्रभाषा पद के लिए सर्वाधिक योग्य मान लिया तो पूरे राष्ट्र में हिन्दी पत्रकारिता के विकास के लिए एक उत्साहवर्धक माहौल बन गया। "गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रम और असहयोग

आंदोलन के प्रचार के लिए देश में अनेक दैनिक साप्ताहिक और मासिक पत्रों का प्रकाशन हिंदी में प्रारंभ हुआ। हिंदी पत्रकारिता की स्वस्थ एवं पुष्ट परंपरा की शुरुआत इसी कॉल में दृढ़ हुई। इस युग की पत्रकारिता पर गांधीजी की विशेष छाप रही।"44 इसलिए हिंदी पत्रकारिता का यह काल खंड 'गांधी युग' के नाम से जाना जाता है।

गांधी जी समाज-सुधारक, चिंतक और जुझारु नेता तो थे ही, वे संपूर्ण काल खंड को अपने नेतृत्व से प्रभावित कर रहे थे। राष्ट्रीय संघर्ष को नई दृष्टि देने के लिये उन्होंने हरिभाऊ के सम्पादन में 1921 में 'हिन्दी नवजीवन' और 1933 में 'हरिजन सेवक' जैसे पत्र निकाले। बंग-भंग, प्रथम विश्व युद्ध की घटना और लोकमान्य तिलक के विचारों के साथ-साथ गांधीजी के राष्ट्रीय आंदोलन का ही संयुक्त असर था कि हिन्दी पत्रकारिता का नया चरण आरम्भ हुआ। 5 अप्रैल 1920 को बनारस के शिवप्रसाद गुप्त ने 'आज' दैनिक की नींव डाली। इसे आज भी लोग पसंद करते हैं। इसी प्रकार से प्रेमचंद का 'हंस' 1930 साहित्यिक और सामाजिक जागृति का अग्रदूत बनकर ख्याति प्राप्त करता रहा।

गांधी युग में पत्रकारिता का बहुआयामी विकास हुआ। साहित्यिक खेमों का विभाजन, उत्थान-पतन का श्रेय इस गाँधीयुगीन पत्रकारिता को तो हैं ही, साथ ही शताधिक श्रेष्ठ कवियों, कथाकारों, नाटककारों, उपन्यासकारों को साहित्य में प्रतिष्ठित करने का श्रेय भी इन्हें प्राप्त है।

द्विवेदीयुगीन पत्रकारिता की विविध आयामी धारा का अविरल प्रवाह गाँधीयुगीन पत्रकारिता में भी जारी रहा। इसलिए धर्म, राजनीति, स्वास्थ्य, जातीय इत्यादि पत्रों का अंकुरण और पल्लवन इस युग मे होता रहा। गाँधी युगीन पत्रकारिता एक मिशन थी, किन्तु आज इसने व्यवसायिकता का रूप ले लिया है। देश सेवा, त्याग और बलिदान कि भावना उन दिनों के पत्रकरों में थीं, वह आज दिखाई नहीं देती है। समय की मांग है कि गाँधी युग के पत्रकारों के आदर्शों को अपनाकर पत्रकारिता की पवित्रता और गरिमा कि रक्षा की जाए और उनके द्वारा बताए गए पत्रकारिता के उद्देश्यों को पूरा किया जाए।

स्वातंत्र्योत्तर काल की हिंदी पत्रकारिता (1947 से अब तक) :

स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व हिंदी-पत्रकारिता मुक्त हवा में सांस नही ले पा रही थी। उसके सामने कदम-कदम पर रोड़े थे। उसे अंग्रेजी सरकार की दमनात्मक प्रवृत्तियों का सामना करना पड़ता था। पत्रकारों को जेल यात्रा करने और सजा भुगतने के लिये भी बाध्य होना पड़ता था। कई पत्रिकाओं को सरकारी कोपभाजन और आर्थिक दंड भुगतान न करने के कारण काल-कवलित हो जाना पड़ा। पत्रकारों के सामने दोहरी चुनौती होती थी। अन्याय का विरोध करना और जनता में अन्याय के विरुद्ध चेतना जगाना। सरकारी दमन से पत्र को मुक्त रखकर उसका जीवन बचना। ये दोनों ही कार्य परस्पर विरोधी थे। इसलिए कई पत्रकारों ने मध्यमार्ग का अनुसरण किया और कई पत्रकारों ने भूमिगत होकर पत्रो का प्रकाशन किया। इन विपरीत परिस्थितियों में पत्रकारिता ने जितना विकास किया, उसे उसके साहस, धैर्य, विवेक और त्याग का प्रतिफल ही कहा गया।

स्वतंत्रता पूर्व की हिंदी पत्रकारिता देश की आजादी, समाज और देश सेवा की भावना से जुड़ी थी, न कि व्यासायिक लाभ के लिये। देश की आजादी के बाद स्थितियों में परिवर्तन आया। लोकतांत्रिक सरकार ने उसे विकसित होने का अवसर दिया। कानूनी शिकंजे से मुक्ति मिली तो पत्रकारिता सेवा से ज्यादा व्यावसायिक रूप लेने लगीं, उन्हें विज्ञापन भी मिलने लगे। जो व्यावसाय में लाभ पाता रहा, वह चलता रहा। जबकि जो घाटे का सौदा सिद्ध हुआ, वह बंद हो गया।

आजादी के बाद की हिन्दी पत्रकारिता को न केवल स्वतंत्र आधार मिला, बल्कि अंग्रेजी की समाचार पत्रकारिता का अनुगमन करने की अनिवार्यता से मुक्ति भी मिल गयी। हिंदी में नई-नई समाचार एजेंसियों ने भी दैनिक पत्रकारिता को विकसित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिए। इसलिए स्वतंत्र भारत के लगभग हर शहर से दैनिक पत्रों का प्रकाशन होने लगा। भारत मे कोई ऐसा कस्बा नही है जहाँ से दो-चार पत्र न निकलते हो।

गांधी-युग मे साहित्यिक पत्रकारिता ने गुण और परिमाण की दृष्टि से बहुत ऊचाइयों तक गया। इस प्रगति की सारथी मासिक पत्रिकाएँ ही थीं। आजादी के बाद उनकी संख्या

और गुणवत्ता दो-तीन दशकों तक प्रगति करती गई, लेकिन आगे उनकी धार कुंद होती चली गई, जो आज भी तेज नही हो पायी है।

स्वतंत्र भारत में हिंदी पत्रकारिता में समाचार और समसामयिक विषयों, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, धर्म एवं दर्शन, साहित्य एवं संस्कृति, खेल, श्रम, समाज कल्याण, विधि, विज्ञानं एवं प्रौद्योगिकी, नारी, कृषि, बीमा-बैंकिंग व्यवसाय आदि विषयों पर स्वस्थ पत्रकारिता कि शुरुआत हुई। स्वतंत्रता (1947) के बाद हिंदी के दैनिक समाचारों की संख्या और प्रसार संख्या में आशातीत वृद्धि हुई हैं। इस युग मे नए दैनिक पत्रों में नवभारत टाइम्स (1947), नवजीवन (1947), अमर उजाला (1948), राष्ट्रदूत (1951), राजस्थान पत्रिका (1956), पंजाब केसरी (1964) इत्यादि नए-नए पत्रों की बाढ़ आ गई, इनमे से कुछ पत्रों के संस्करण कई-कई शहरों से प्रकाशित हो रहे हैं। आज, जनसत्ता, राष्ट्रीय सहारा, दैनिक जागरण, दैनिक भास्कर, अमर उजाला, हिन्दुस्तान, पंजाब केसरी, नई दुनिया, अमृत प्रभात, गांडीव, नवभारत टाइम्स, सांध्य दैनिक इत्यादि पत्रों की प्रसार संख्या में आशातीत वृद्धि हुई है।

निश्चित ही हिन्दी पत्रकारिता ने कई चरणों मे अपनी यात्रा तय की है। आज पत्रकारिता के इतने प्रकार और रूप है, उनकी इतनी बड़ी संख्या और विशाल पाठक वर्ग हैं कि हिन्दी पत्रकारिता व्यवसाय और रोजगार का साधन बन गई है। बावजूद इसके हिन्दी पत्रकारिता विकास की चरम सीमा पर पहुंच गई हैं। अभी लंबा सफर तय करना शेष है।

हिंदी पत्रकारिता का उद्देश्य, आदर्श एवं दायित्व :

उद्देश्य :

पत्र-पत्रिकाओं में सदा से ही समाज को प्रभावित करने की क्षमता रही है। समाज में जो हुआ, जो हो रहा है, जो होगा, और जो होना चाहिए यानी जिस परिवर्तन की जरूरत है, इन सब पर पत्रकार को नजर रखनी होती है। आज समाज में पत्रकारिता का महत्व काफी बढ़ गया है। इसलिए उसके सामाजिक और व्यावसायिक उत्तरदायित्व भी बढ़ गए हैं। पत्रकारिता का उद्देश्य सच्ची घटनाओं पर प्रकाश डालना है, वास्तविकताओं को सामने

लाना है। इसके बावजूद यह आशा की जाती है कि वह इस तरह काम करे कि 'बहुजन हिताय' की भावना सिद्ध हो।

महात्मा गांधी के अनुसार, 'पत्रकारिता के तीन उद्देश्य हैं-

1. जनता की इच्छाओं, विचारों को समझना और उन्हें अभिव्यक्ति देना है।
2. लोगों में वांछनीय भावनाएं जागृत करना।
3. निर्भीक तरीके से गड़बड़ियों को उजागर करना है।

गांधी जी ने पत्रकारिता के जो उद्देश्य बताए हैं, उन पर गौर करें तो प्रतीत होता है कि पत्रकारिता का वही काम है जो किसी समाज सुधारक का हो सकता है।

पत्रकारिता नई जानकारी देता है, लेकिन इतने से संतुष्ट नहीं होता वह घटनाओं, नई बातों, नई जानकारियों की व्याख्या करने का प्रयास भी करता है। घटनाओं का कारण, प्रतिक्रियाएं, उनकी अच्छाई-बुराइयों की विवेचना भी करता है।

पूर्व राष्ट्रपति शंकरदयाल शर्मा के अनुसार, पत्रकारिता पेशा नहीं, यह जनसेवा का माध्यम है। लोकतांत्रिक परम्पराओं की रक्षा करने शांति और भाईचारे की भावना बढ़ाने में इसकी भूमिका है।

समाज के विस्तृत क्षेत्र के संदर्भ में पत्रकारिता के निम्नलिखित उद्देश्य व दायित्व बताये जा सकते हैं-

- नई जानकारियां उपलब्ध कराना
- सामाजिक जनमत को अभिव्यक्ति देना
- समाज को उचित दिशा निर्देश देना
- स्वस्थ मनोरंजन की सामग्री देना
- सामाजिक कुरीतियों को मिटाने की दिशा में प्रभावी कदम उठाना
- धार्मिक सांस्कृतिक पक्षों का निष्पक्ष विवेचन करना
- सामान्यजन को उनके अधिकार समझाना
- कृषि जगत व उद्योग जगत की उपलब्धियां जनता के सामने लाना

- सरकारी नीतियों का विश्लेषण और प्रसारण
- स्वास्थ्य जगत के प्रति लोगों को सतर्क करना
- सर्वधर्म समभाव को पुष्ट करना
- संकटकालीन स्थितियों में राष्ट्र का मनोबल बढ़ाना
- वसुधैव कुटुम्बकम की भावना का प्रसार करना

समाज में मानव मूल्यों की स्थापना के साथ जन जीवन को विकासोन्मुख बनाना पत्रकारिता का दायित्व है। पत्रकारिता के सामाजिक और व्यवसायिक उत्तरदायित्व के अनेकानेक आयाम हैं। अपने इन उत्तरदायित्व का निर्वाह करने के लिए पत्रकार का एक हाथ हमेशा समाज की नब्ज पर होता है।

आदर्श :

पत्रकारिता का क्षेत्र असीमित है। इसे सीमओं के बंधन में बांधा नहीं जा सकता। पत्रकारिता पेशा नही है। यह बुद्धिजीवियों का समूह है। देश में पत्रकारिता ने देश की आजादी दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इसमे अनेकों विद्वानों का सक्रिय समूह था। इसके साथ ही पत्रकार भी इस आजादी के आन्दोलन में शहीद भी हुए। निष्पक्ष पत्रकारिता ही पत्रकार की गरिमा को ऊचाइया प्रदान करता हैं। यह एक ऐसा कार्य है जिसने समाज, सरकार और देश की नीतियों को राह दिखाई है। यदि देश की आजादी से पहले की बात की जाय तो पत्रकार की गरिमा हुआ करती थी। सम्मान मिलता था, पहले पत्रकार सिर्फ देश और समाज की भलाई सोचता था। अपने सोच को कलम से उतारकर पेश करता था। समय बदलता गया, समय के साथ पत्रकारिता के आदर्श भी बदलते गये। धीरे-धीरे पत्रकारिता ने स्वार्थ की राह पर कदम रखा। इसके साथ ही लालच और सरकार में ओहदे पाने की इच्छा पनपती गयी।

आज जिस राह पर पत्रकारिता चल रही है, दिनों-दिन पत्रकारों की छीछलेदर ही हो रही है। बड़े अखबारों व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से लेकर अधिकांश पत्रकार किसी भी रूप

में लाभ लेने की ओर अग्रसर हैं। समय के साथ पत्रकार भी बदलता गया। सरकार की तारीफों के कसीदे पढ़ना, जहाँ से लाभ नही मिल पा रहा है उनकी कमियां निकालना, पक्षपात करना ही इनका मुख्य काम रह गया है। आज देश में यह स्थिति है कि अधिकांश का समाचार समूह किसी न किसी के समर्थक हैं। यह कड़वा सच है। खासतौर पर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया तो इस स्तर पर आ गया है कि जिसका पक्ष लेना होता है, उसके नुमाइंदे को विचार व्यक्त करने के लिए अधिक समय देता है।

पत्रकार का सम्मान प्रतिदिन कम होता जा रहा है। उच्च स्तर पर पत्रकार सरकार में स्थान पाना चाहते हैं। निचले स्तर पर पत्रकार सरकार में स्थान पाना चाहता है। निचले स्तर पर पत्रकार कार्यालयों में अफसरान के यहां प्रतिदिन ड्यूटी पर हाजिरी देता है। इस तरह की कार्य प्रणाली पत्रकारों के सम्मान को ठेस पंहुचा रही है। एक वक्त था जब पत्रकारों को सम्मान दिया जाता था। शासन-प्रशासन अपनी खबर छपवाने के लिए आगे पीछे घूमते थे। आज चाटुकारिता कर सम्मान ख़तम कर रहे हैं साथ ही बेइज्जती भी करा रहे हैं। नेता कभी कैमरे तोड़ देते हैं तो कभी पिटाई करवा देते हैं, कभी गालियों से स्वागत करते हैं। पत्रकार का स्तर दिनों दिन गिरता जा रहा है। इसका महज कारण स्वार्थ लोलुपता या किसी सरकारी ओहदे को हथियाना है। ईमानदारी से पत्रकारिता करने वाले अब उँगलियों पर गिनने लायक ही रहे हैं। दोष किसी और में नहीं, आज की पत्रकारिता करने वालो में है। हमें अपने अन्दर झांकने की जरूरत है।

दायित्व :

पत्रकारिता का दायित्व बहुत प्रामाणिक और जिम्मेदारी का है। कुछ दिन पहले समाचार पत्रों में आया कि एक वीडियो जिसमें 9 फरवरी को JNU में हुए वारदात दिखाया गया है वह सही है और किसी प्रकार की छेड़खानी नहीं की गयी है। इस वीडियो के सम्बन्ध में कुछ नेताओं ने बहुत शोर मचाया था कि ZEETV द्वारा प्रसारित वीडियो में कुछ अलग से क्लिप्स जोड़े गए ताकि विद्यार्थी नेताओं को देशद्रोही करार दिया जाये। साथ ही इलज़ाम

यह भी लगाया गया कि इसमें बीजेपी का भी साथ है ताकि प्रजातांत्रिक अधिकारों का पालन करते हुए सरकार के कदमों को प्रताड़ना कहने के लिए JNU के छात्रों को बुरे प्रकाश में दिखलाने की इसमें साजिश थी। पत्रकारों ने चाहे वे छपाई माध्यम से समाचार देने का काम करें या इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से TV से प्रसारण में लगे हों ZEETV द्वारा प्रसारित JNU छात्रों द्वारा बगावत का सन्देश देने वाले वीडियो को सही मानने से इंकार कर दिया। अंग्रेजी समाचार पत्रों में असहिष्णुता का राग अलापा जाता रहा और विरोध करने के अधिकार को दमन करने की बात होती रही।

हिंदी समाचार पत्रों की जैसे कोई अपनी राय ही नहीं, इन समाचार पत्रों में अंग्रेजी के सहयोगी समाचार पत्रों का प्रतिबिम्ब रहता है। हिंदी समाचार पत्रों ने भी सही प्रकार से समाचार और विवाद प्रस्तुत करने में बहुत अयोग्यता का प्रदर्शन किया। यहाँ यह भी निराशा जताना आवश्यक है कि हिंदी समाचार पत्रों में समाचार प्रस्तुत करने और इसके विश्लेषण में अपरिपक्वता का साफ प्रदर्शन होता है। यह हमारे समाज के लिए हानिकारक है क्योंकि बहुसंख्यक जनता हिंदी ही पढ़ सकती है और अपेक्षा की जाती है कि समाचार प्रस्तुति में इमानदारी हो और दूध का दूध पानी का पानी अलग किया जा सके। गंभीर विश्लेषण का हिंदी समाचार पत्रों में अभाव दिखाई देता है। मेरी यह धारणा है कि हिंदी समाचार पत्र संपादक अपने दायित्व को समझने में शीघ्र सफल होंगे और सहयोगी अंग्रेजी पत्र से अपनी अलग पहचान बनाएंगे। प्रजातंत्र की सफलता के लिए यह आवश्यक है कि इसके सारे स्तंभ सबल हों और एक दूसरे के साथ इनका समन्वय हो। याद दिला दें कि प्रजातंत्र के स्तंभ है– न्याय, समानता, स्वतंत्रता, प्रतिनिधित्व। सभी को सामान न्याय मिले, किसी के साथ ऐसा न हो कि न्याय न मिले। देश के सभी नागरिक समान रूप से आगे बढने का अवसर प्राप्त करने के अधिकारी हों। सभी को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता तथा धार्मिक पथ के चयन और उस पर चलने की आज़ादी हो। साथ ही साथ यह भी आवश्यक है कि शासन के लिए सभी को प्रतिनिधि चयन का अधिकार हो ताकि प्रतिनिधि हम सबके के अधिकारों की रक्षा करने का काम करें। पत्रकार की भूमिका है कि नागरिकों को जागरूक रखें ताकि प्रजातंत्र के चारों स्तंभों का काम सुचारू रूप से हो। मुझे ऐसा लगता

है कि अंग्रेजी पत्रकारिता अंग्रेजों की विचारधारा को ध्यान रखते हुए काम करती है। देश की वास्तविकता को समझना और अपनी संस्कृति, विचारधारा, कार्यप्रणाली को देखते हुए सरकार पर नज़र रखना कि प्रजातंत्र के सभी स्तंभों को सुचारू रूप से चलाया जा रहा है यही हमारे पत्रकारों का दायित्व है। किसी राजनीति से प्रेरित होकर काम करने की अपेक्षा हम पत्रकारों से नहीं करते। समग्र रूप में पत्रकारिता के तीन प्रमुख दायित्यों को इन तीन बातों में समाहित किया जा सकता है-

1. विशाल मानव परिवार की एकता (विश्व बंधुत्व)
2. जन सेवा (सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति में सुधार के लिए प्रयत्नशील रहना)
3. शांति स्थापना।

ये उद्देश्य अपने-आप में इतने पूर्ण हैं कि इनमें मानव कल्याण की सभी बातें – सामाजिक सुधार से लेकर आर्थिक क्रांति तक आ सकती है।

इस प्रक्रिया में इस पर ध्यान नहीं जाता कि प्रजातंत्र की नींव अथवा इसके मूल सिद्धांतों के अनुसार शासन चल रहा है या नहीं। ध्यान दिलाते चलें कि प्रजातंत्र के मूल सिद्धांत हैं– सामाजिक समानता, बहुमत से शासन चलाना, अल्पसंख्यकों के अधिकारों का उलंघन न होना, अभिव्यक्ति तथा धार्मिक स्वतंत्रता के साथ ही साथ रहन-सहन की स्वतंत्रता, ईमानदारी होना शासन चलाने में और प्रजातंत्र के मूल सिद्धांतों की रक्षा में प्रतिनिधियों की जागरूकता तथा निस्वार्थ ईमानदारी। पत्रकार का दायित्व बनता है कि प्रजातंत्र के इन मूल सिद्धांतों का सही पालन हो इस पर ध्यान लगाए रखना और जहाँ कमी लगे उस ओर जनता और जनता के निर्वाचित प्रतिनिधियों का ध्यान आकर्षित करना। JNU छात्रों के उपद्रवों का विवरण ईमानदारी से पत्रकारों ने जनता के सामने नहीं रखा। ऐसी अनेकों घटनाएँ देश के कोने-कोने में हो रही हैं जिस पर गौर करने की जरूरत है।

हिंदी पत्रकारिता का स्वरूप एवं महत्व :

हिंदी पत्रकारिता का स्वरूप :

सामाजिक सरोकारों तथा सार्वजनिक हित से जुड़कर ही पत्रकारिता सार्थक बनती है। सामाजिक सरोकारों को व्यवस्था की दहलीज तक पहुँचाने और प्रशासन की जनहितकारी नीतियों तथा योजनाओं को समाज के सबसे निचले तबके तक ले जाने के दायित्व का निर्वाह ही सार्थक पत्रकारिता है।

पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा पाया (स्तम्भ) भी कहा जाता है। पत्रकारिता ने लोकतंत्र में यह महत्त्वपूर्ण स्थान अपने आप नहीं हासिल किया है बल्कि सामाजिक सरोकारों के प्रति पत्रकारिता के दायित्वों के महत्त्व को देखते हुए समाज ने ही दर्जा दिया है। कोई भी लोकतंत्र तभी सशक्त है जब पत्रकारिता सामाजिक सरोकारों के प्रति अपनी सार्थक भूमिका निभाती रहे। सार्थक पत्रकारिता का उद्देश्य ही यह होना चाहिए कि वह प्रशासन और समाज के बीच एक महत्त्वपूर्ण कड़ी की भूमिका अपनाये।

पत्रकारिता के इतिहास पर नजर डालें तो स्वतंत्रता के पूर्व पत्रकारिता का मुख्य उद्देश्य स्वतंत्रता प्राप्ति का लक्ष्य था। स्वतंत्रता के लिए चले आंदोलन और स्वाधीनता संग्राम में पत्रकारिता ने अहम और सार्थक भूमिका निभाई। उस दौर में पत्रकारिता ने पूरे देश को एकता के सूत्र में पिरोने के साथ-साथ पूरे समाज को स्वाधीनता की प्राप्ति के लक्ष्य से जोड़े रखा।

इंटरनेट और सूचना के आधिकार (आर.टी.आई.) ने आज की पत्रकारिता को बहुआयामी और अनंत बना दिया है। आज कोई भी जानकारी पलक झपकते उपलब्ध की और कराई जा सकती है। मीडिया आज काभी सशक्त, स्वतंत्र और प्रभावकारी हो गया है। पत्रकारिता की पहुँच और आभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का व्यापक इस्तेमाल आमतौर पर सामाजिक सरोकारों और भलाई से ही जुड़ा है, किंतु कभी-कभार इसका दुरपयोग भी होने लगा है।

संचार क्रांति तथा सूचना के आधिकार के अलावा आर्थिक उदारीकरण ने पत्रकारिता के चेहरे को पूरी तरह बदलकर रख दिया है। विज्ञापनों से होनेवाली अथाह कमाई ने पत्रकारिता को काफी हद्द तक व्यावसायिक बना दिया है। मीडिया का लक्ष्य आज अधिक से अधिक कमाई का हो चला है। मीडिया के इसी व्यावसायिक दृष्टिकोण का नतीजा है कि उसका ध्यान सामाजिक सरोकारों से कहीं भटक गया है। मुद्दों पर आधारित पत्रकारिता के बजाय आज इन्फोटेमेंट ही मीडिया की सुर्खियों में रहता है।

इंटरनेट की व्यापकता और उस तक सार्वजनिक पहुँच के कारण उसका दुष्प्रयोग भी होने लगा है। इंटरनेट के उपयोगकर्ता निजी भड़ास निकालने और आपत्तिजनक प्रलाप करने के लिए इस उपयोगी साधन का गलत इस्तेमाल करने लगे हैं। यही कारण है कि यदा-कदा मीडिया के इन बहुपयोगी साधनों पर अंकुश लगाने की बहस भी छिड़ जाती है। गनीमत है कि यह बहस सुझावों और शिकायतों तक ही सीमित रहती है। उस पर अमल की नौबत नहीं आने पाती। लोकतंत्र के हित में यही है कि जहाँ तक हो सके पत्रकारिता को स्वतंत्र और निर्बाध रहने दिया जाए, और पत्रकारिता का अपना हित इसमें है कि वह आभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का उपयोग समाज और सामाजिक सरोकारों के प्रति अपने दायित्वों के ईमानदार निवर्हन के लिए करती रहे।

उपरोक्त बातों को ध्यान में रखते हुए पत्रकारिता का स्वरूप संक्षेप में इस प्रकार सामने आता है -

- पत्रकारिता अत्यंत महत्वपूर्ण एवं अभिजात्य कार्य है।
- इसका जीवन और जगत से गहन संबंध है।
- इसका उद्देश्य एक ऐसे आदर्श समाज की संरचना करना है जिसमें लोग स्वास्थ्य, प्रसन्न और हर दृष्टि से संपन्न जीवन-यापन कर सकें।
- इसमें नवीन से नवीनतम सामाजिक घटनाओं को महत्व दिया जाता है।
- यह नवीनतम के संकलन, चयन, संपादन एवं प्रकाशन-संप्रेषण की समग्र प्रक्रिया का नाम है।
- इसे सामाजिक ज्ञान का व्यवसाय कहा जा सकता है।

- इसके अंतर्गत सभी तरह के संचार माध्यम परिगणित किए जा सकते हैं। विशेष रूप से समाचार पत्र, पत्रिकाएं, रेडियो, दूरदर्शन आदि।

पत्रकारिता का क्षेत्र विस्तृत है और समाज के प्रति उसका दायित्व महत्वपूर्ण है। जैसे-

- सामाजिक जनमत की अभिव्यक्ति देना।
- सामाजिक स्वास्थ्य के प्रति समाज को सचेत करना।
- सर्वधर्म समभाव एवं सौहार्द भाव पुष्ट करना।
- संकटकालीन परिस्थितियों में राष्ट्र का मनोबल बढ़ाना।
- वसुधैव कुटुंबकम की भावना का प्रसार करना।

नि:संदेह पत्रकारिता एक व्यापक एवं जटिल प्रक्रिया है।

हिंदी पत्रकारिता का महत्व :

पत्रकारिता जन-भावना की अभिव्यक्ति, सद्भावों की अनुभूति और नैतिकता की पीठिका है। संस्कृति, सभ्यता और स्वतंत्रता की वाणी होने के साथ ही यह जीवन में अभूतपूर्व क्रांति की अग्रदूतिका है।

अकबर इलाहाबादी ने कहा है कि "जब तोप से मुकाबला हो तो समाचार पत्र निकालिए" उनके अनुसार कलम तलवार से भी अधिक शक्तिशाली होती है।

समाचार पत्र तत्कालिक समाज की सोच और विचारधारा का दर्पण है। समाचार पत्र अपने चारों ओर की अद्यतन खबरें या सूचनाएं पाठकों तक पहुंचाता है। समाचार पत्र अतीत के साथ-साथ वर्तमान का संकेत देता हुआ भविष्य की संभावनाएं उजागर करता है। इसलिए पत्रकारिता प्रत्येक क्षेत्र में महत्वपूर्ण साधन बन गई है। सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री विष्णु राव पराड़कर ने समाचार-पत्र के दो मुख्य धर्म माने हैं- "एक समाज का चित्र खीचना और दुसरे उसे सदुपदेश देना।"45

शिक्षा तथा पत्रकारिता का अभिन्न संबंध है। दोनों का उद्देश्य जन-साधारण को शिक्षित करना है। शिक्षा तथा पत्रकारिता की समन्वित पाठ्य सामग्री ही शैक्षिक पत्रकारिता की विषय वस्तु है।

पत्र-पत्रिकाएं अपने कार्य-कलापों से राष्ट्र को प्रभावित करती हैं। क्योंकि जनमत निर्माण के महत्वपूर्ण दायित्व को यह पूरा करती है। देश की गुलामी के युग में पत्र-पत्रिकाओं ने अदम्य साहस का परिचय देते हुए देश के नागरिकों की स्वतंत्रता की भावना का प्रचार और प्रसार किया।

हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र :

वर्तमान स्थिति में अत्याधुनिक संचार साधनों के साथ-साथ जीवन के बहुआयामी पक्ष को पत्रकारिता ने प्रभावित किया है। पत्रकारिता के प्रकार, क्षेत्र और विषय पर सभी विद्वान एकमत नही हैं और यह स्वाभाविक भी है, क्योंकि पत्रकारिता आज बहुआयामी है। मानव जीवन का कोई क्षेत्र ऐसा नहीं है जहां पत्रकारिता ना हो, इसी कारण पत्रकारिता ने विभिन्न क्षेत्र में अपना अस्तित्व कायम किया है।

आर्थिक पत्रकारिता (Economical Journalism) :

आर्थिक क्षेत्र में होने वाली गतिविधियों, व्यापार के उतार-चढ़ाव आदि को आर्थिक पत्रकारिता में शामिल किया जाता है। एक कहावत है- "अर्थ बिना सब व्यर्थ" अर्थात अर्थ हर प्रकार के विकास में अनिवार्य भूमिका रखता है। इसलिए शेयर बाज़ार, पूँजी बाजार, वस्तु बाजार से लेकर सरकारी बजट और उद्योग-धन्धों में अर्थ की महत्वपूर्ण भूमिका की जानकारी आर्थिक पत्रकारिता ही देती हैं। मुद्रा-भाव का लुढ़कना, चढ़ना, पेट्रोल, रुपये या डॉलर की कीमतों में उछाल-गिरावट, शेयर-बाजार में विनिवेश आदि की जानकारी शायद ही कोई अखबार हो, जो प्रकाशित नही करता हो। आकाशवाणी, दूरदर्शन विभिन्न चैनलों

पर भी आर्थिक समाचार प्रसारित किये जाते है। कई समाचार पत्र ऐसे भी है जो केवल आर्थिक समाचार ही प्रकाशित करने के कारण अपनी अलग पहचान रखते हैं।

विकास पत्रकारिता (Development Journalism) :

विकास समाज-कल्याण के क्षेत्र का हो, उद्योग-धंधे का हो, प्राविधिक हो, सड़क, पानी, बिजली से जुड़ा हुआ हो अथवा आर्थिक हो, इसके लिये अखबारों में 'विकास के बढ़ते कदम' जैसे शीर्षकों से बड़े-बड़े विज्ञापन प्रकाशित किये जाते है। सरकार स्वयं भी पत्रिकाएँ प्रकाशित कर अपने कार्यों को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करती है। केंद्र सरकार की पत्रिका योजना, कुरुक्षेत्र सरकार द्वारा किये गए विकास कार्यों का लेखा जोखा भी प्रस्तुत करती है। इसलिए आज की पत्रकारिता केवल राजनीतिक या आपराधिक खबरों से ही नही जुड़ी है, अपितु विकास की सूचनाओं से भी जुड़ गई हैं।

महिला पत्रकारिता (Women Journalism) :

महिला समस्याओं पर 1888 ईस्वी में "सुगृहनी" नामक पत्रिका का जयपुर से हेमंत कुमारी ने 'महिला पत्रकारिता' का प्रारंभ किया। पत्रकारिता के क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी भी देखी जाने लगी है। महिला जागरण के साथ-साथ महिलाओं के प्रति अत्याचार और अपराध के मामले भी बढ़े हैं। महिलाओं की सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए बहुत सारे कानून बने हैं।

महिलाओं को सामाजिक सुरक्षा दिलाने में महिला पत्रकारिता की अहम भूमिका रही है। आज महिला पत्रकारिता की अलग से जरूरत ही इसलिए है कि उसमें महिलाओं से जुड़े हर पहलू पर गौर किया जाए और महिलाओं के सर्वांगीण विकास में यह महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके।

ग्रामीण पत्रकारिता (Rural Journalism) :

ग्रामीण पत्रकारिता के माध्यम से हम ग्रामीण क्षेत्रों को आज की वैश्विक दुनिया से जोड़ सकते हैं। ग्रामीण पत्रकारिता ग्रामीण इलाकों के मुद्दों को संबोधित करता है। इन मुद्दों में ग्रामीण समाचारों का कवरेज शामिल है जो किसानों, आदिवासियों, ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक रूप से पिछड़े लोगों से संबंधित हैं। ये समाचार कृषि, पशुपालन, बीज, खाद, कीटनाशक, पंचायती राज, सहकारिता और ग्राम्य जीवन आदि विषयों पर हो या गाँव की अन्य मूलभूत समस्याओं पर गाँवों की तमाम समस्या लोगों तक तथा सरकार तक पहुँचाने का काम ग्रामीण पत्रकारिता करती है।

बाल पत्रकारिता (Children Journalism) :

बाल पत्रकारिता, पत्रकारिता का एक महत्वपूर्ण अंग है। इसमें बाल जीवन से संबंधित बातें होती है। इसमें बच्चों से संबंधित पढ़ाई-लिखाई, खेलकूद, कविता-कहानी, उपन्यास, नाटक आदि का समावेश होता है। बाल पत्र-पत्रिकाओं के पत्रकार औऱ संपादक को एक बालक की तरह होना पड़ता है। बालोपयोगी रचनाओं के चयन, रंगीन चित्रों के संपादन, चुटकुले हास्य व्यंग और कार्टून-कॉमिक्स के माध्यम से बाल पत्र-पत्रिकाओं को आकर्षक बनाया जाता है। भारतेंदु युग में ही 1882 में 'बाल दर्पण' (मासिक) यह बच्चों की पहली पत्रिका थी।

साहित्यिक पत्रकारिता (Literary Journalism) :

साहित्यिक पत्रकारिता एक ऐसा माध्यम है जिसके जरिए साहित्य की विभिन्न विधाओं को विशेष प्रयोजन के साथ अभिव्यक्ति दी जाती है। ये विधाएं आलोचना, काव्य, कथा-साहित्य, नाट्य, निबंध, संस्मरण, साक्षात्कार, समीक्षा, समकालीन साहित्य विमर्श, तुलनात्मक साहित्य, साहित्य- संस्कृति आदि पर केंद्रित होती हैं। अर्थात् साहित्यिक पत्रकारिता क्षणों में नहीं युगों में जीवित रहने का प्रयास करती है।

हिंदी पत्रकारिता का यह उदय 30 मई 1826 में 'उदंत मार्तंड' प्रथम साप्ताहिक पत्र से कोलकाता में हुआ। संपादक कानपुर उत्तर प्रदेश निवासी श्री जुगल किशोर शुक्ल साहित्यिक अभिरुचि के व्यक्ति थे। 10 मई 1829 में राजा राममोहन राय का 'बंगदूत' प्रकाशित हुआ।

खेल पत्रकारिता (Sports Journalism) :

खेलों की रिपोर्टिंग करना बड़े ही धैर्य और अनुभव का काम है। सामान्य रिपोर्टिंग से हटकर खेल रिपोर्टिंग दुष्कर मानी जाती है। इसके लिए व्यापक अनुभव, खेलों के संबंध में पर्याप्त ज्ञान, उनके लिए बने हुए नियम, समय-समय पर किए गए बदलाव की सम्पूर्ण जानकारी, संबंधित रिकॉर्ड की जानकारी आदि होना आवश्यक है। खेल संगठनों के बारे में जानकारी के साथ-साथ राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लिए गए निर्णयों, संभावित मैचों, विशेष खिलाड़ियों की सम्पूर्ण जानकारी, उनके रोमांचकारी प्रदर्शन के अंशों के बारे में ज्ञान आदि की अपेक्षा एक रिपोर्टर से की जाती है।

खेल पत्रकार में निम्नलिखित गुणों की अपेक्षा की जाती है -

- सूक्ष्म व खोजपूर्ण नज़र
- खेलों के नियमों की सम्पूर्ण जानकारी
- भाषा का समुचित ज्ञान
- खेलों के तकनीकी शब्दावली का ज्ञान
- खिलाड़ियों और पदाधिकारियों से बातचीत करके सच्चाई को प्रकट करने का साहस
- तकनीकी शब्दों को सरल भाषा में आम पाठक की भाषा के रूप में प्रस्तुत करने का कौशल
- तेज गति से लिखने की आदत

रेडियो एवं दूरदर्शन पत्रकारिता (Redio/T.V.Journalism) :

मुद्रण के आविष्कार के बाद संदेश और विचारों को शक्तिशाली और प्रभावी ढंग से अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाना मनुष्य का लक्ष्य बन गया। इसी से रेडियो का जन्म हुआ। रेडियो के आविष्कार के जरिए आवाज एक ही समय में असंख्य लोगों तक उनके घरों में पहुंचने लगा। इस प्रकार श्रव्य माध्यम के रूप में जनसंचार को रेडियो ने नये आयाम दिए। रेडियो की विशेषता है कि यह सार्वजनिक भी है और व्यक्तिगत भी।

मनोरंजन के क्षेत्र में फिल्मों से संबंधित कार्यक्रम, नाटक, धारावाहिक, नृत्य, संगीत तथा मनोरंजन के विविध कार्यक्रम शामिल हैं। इन कार्यक्रमों का प्रमुख उद्देश्य लोगों का मनोरंजन करना है। शिक्षा के क्षेत्र में दूरदर्शन की महत्वपूर्ण भूमिका है।

खोजी पत्रकारिता (Investigative Journalism) :

जब पत्रकार गहराई से छान-बीन करके ऐसे तथ्यों और सूचनाओं को सामने लाने की कोशिश करता है, जिन्हें दबाने या छुपाने का प्रयास किया जाता है, ऐसी पत्रकारिता को खोजपरक या खोजी पत्रकारिता कहते हैं। आमतौर पर खोजी पत्रकारिता सार्वजनिक महत्व के मामलों में भ्रष्टाचार, अनियमितताओं और गड़बड़ियों को सामने लाने की कोशिश करती है। भारत में खोजी पत्रकारिता तीन दशक पहले ही शुरू हो गई थी लेकिन अभी इसका पूरा विकास नहीं हो पाया है इसलिए यह अभी शैशवकाल में ही है। अमेरिका का वाटरगेट कांड खोजी पत्रकारिता का एक बड़ा उदाहरण है जिसके कारण राष्ट्रपति निक्सन को इस्तीफा देना पड़ा था।

पीत पत्रकारिता (Yellow Journalism) :

इस शब्द का सबसे पहले इस्तेमाल उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में अमेरिका में कुछ प्रमुख समाचारपत्रों के बीच पाठकों को आकर्षित करने के लिए छिड़े संघर्ष के लिए किया गया था। उस समय के प्रमुख समाचारपत्रों ने पाठकों को लुभाने के लिए झूठी अफवाहों

व्यक्तिगत आरोप-प्रत्यारोपण प्रेम संबंधी, भंडाफोड़ और फ़िल्मी गपशप को समाचार की तरह प्रकाशित किया। उसमें सनसनी फैलाने का तत्व अहम था।

पेज थ्री पत्रकारिता :

पेज थ्री पत्रकारिता का तात्पर्य ऐसी पत्रकारिता से है जिसमें फ़ैशन, अमीरों की पार्टियों महफ़िलों और जाने-माने लोगों (सेलेब्रिटीज़) के निजी जीवन के बारे में बताया जाता है। यह आमतौर पर समाचारपत्रों के पृष्ठ तीन पर प्रकाशित होती रही है। इसलिए इसे पेज थ्री पत्रकारिता कहते हैं। हालांकि अब यह जरूरी नहीं है कि यह पृष्ठ तीन पर ही प्रकाशित होती है लेकिन इस पत्रकारिता का लेखन अब भी उन्हीं विषयों पर है।

नई पत्रकारिता/ इलेक्ट्रॉनिक मीडिया (Electronic Media) :

आज के युग में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की शक्ति, उसका प्रभाव और उसकी क्षमता किसी से भी छिपी नहीं है। बीसवीं सदी में पैदा हुए इस संचार माध्यम के सभी घटक जैसे रेडियो, टीवी, इंटरनेट और मोबाइल आज हर आधुनिक व्यक्ति के जीवन का अभिन्न अंग बन चुके हैं। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया हमारी ज़िंदगी को काफी प्रभावित किया है। इसने जानकारी का प्रसार तेज़ कर दिया है और उसकी विश्वसनीयता भी बढ़ा दी है। इंटरनेट के जरिए हम प्रिंट मीडिया की तरह खबरों को पढ़ भी सकते हैं, रेडियो की तरह सुन भी सकते हैं और टेलीविजन की तरह खबरों को देख भी सकते हैं। इसी विशेषता के कारण इंटरनेट का विस्तार सबसे तेज़ संचार माध्यम के रूप में हो रहा है।

हिन्दी पत्रकारिता का वर्तमान परिदृश्य :

सन् 2023 में हिन्दी पत्रकारिता ने लगभग 200 वर्षों की यात्रा तय की है। इस यात्रा क्रम में इसने बहुत कठिन दौर देखे हैं। इनकी यात्रा राजपथ पर नहीं कंटक और कंकण

भरी भूमि पर हुई। अनेक तूफान और झंझावातों का सामना करती हुई आज यह राहत की साँस ले रही है। इस बीच इसके इस वृक्षाकार रूप से न जाने कितने फूल, पत्ते, टहनियां सूखकर झर चुके हैं। फिर भी इसकी हरियाली में आज कोई कमी नजर नहीं आती। इसका सिर गौरव से ऊंचा हुआ है, ललाट दिव्य आभा से आलोकित है। इसमें अपूर्व और अनंत जीवनेच्छा का परिणाम है कि अपने अनगिनत दुश्मनों से लोहा लेती हुई यह निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर है।

आधुनिक युग मे संचार माध्यमों की अभूतपूर्व प्रगति और नए नए वैज्ञानिक उपकरणों के आविष्कार के बाद यह प्रतीत हो रहा था कि मुद्रित पत्रकारिता का अवसान काल समीप आ रहा है। टी.वी. के विभिन्न चैनल्स की मोहक प्रस्तुतियों और जीवंत चित्रों के आगे मुद्रित पत्रकारिता एकदम ओछी प्रतीत होने लगी है। कुल मिलाकर हिंदी पत्रकारिता का वर्तमान संतोषप्रद है।

हिन्दी पत्रकारिता का भविष्य :

पांच साल या हो सकता है कि दो साल में ही, पूरा सीन बदल जाएगा। और बदलेगा इतनी तेजी से और इतना ज्यादा कि शक्लोसूरत पहचान में नहीं आएगी। मेरा अनुमान है कि दो साल के बाद इस देश में कुछ करोड़ लोग पत्रकारिता कर रहे होंगे और 80 फीसदी से ज्यादा पत्रकारों के पास करने के लिए कुछ और काम होगा या कोई काम नहीं होगा। मैं पत्रकारों की नौकरियां जाने की ही बात कर रहा हूं।

अमेरिकी स्कॉलर एन. कूपर ने आज से कुछ साल पहले कहा था, 'सवाल यह नहीं है कि पत्रकार कौन है। सवाल यह है कि पत्रकारिता कौन कर रहा है।' क्या वह आदमी पत्रकार माना जाएगा, जिसने राडिया टेप कांड के बारे में, मेनस्ट्रीम कहे जाने वाले मीडिया में, पहली लाइन लिखे या बोले जाने से पहले टेप को यूट्यूब पर डाल दिया था और एक पत्रिका में पहली बार राडिया टेप के बारे में रिपोर्ट होने से पहले लाखों लोगों को पता था कि राडिया टेप कांड हो चुका है और वे इस बारे में कमेंट और जवाबी कमेंट पढ़कर

अपना नजरिया भी बना चुके थे। वे किसी के बताने के पहले जान चुके थे कि इस देश में कॉरपोरेट पब्लिक रिलेशन का तंत्र इतना ताकतवर हो चुका है कि वह केंद्रीय मंत्रिमंडल में कौन होगा और कौन नहीं और कौन-सा मंत्री किस विभाग में होगा, आदि तय कर रहा है।

अगर वह शख्स पत्रकारिता कर रहा था, जिसने राडिया टेप को यूट्यूब में डाला, तो यह मान लेने में कोई हर्ज नहीं है कि भारत भी करोड़ों पत्रकारों के युग में प्रवेश कर चुका है। पूरी दुनिया में और खासकर पश्चिमी दुनिया में मास मीडिया के क्षेत्र में जो चल रहा है, उसने अब भारत को भी अपनी चपेट में ले लिया है। जो लोग इस बदलाव को नोटिस नहीं करना चाहते, वे किसी एक दिन जगेंगे, तो उन्हें लगेगा का सब कुछ बदल चुका है।

हालांकि इंटरनेट के जरिए भी, हम तक ज्यादातर समाचार परंपरागत टीवी चैनलों और अखबारों के पोर्टल के जरिए ही पहुंच रहे हैं, फिर भी आज एक आदमी जिसके पास आठ-दश हजार रुपये का स्मार्टफोन है और 150 रुपये का इंटरनेट पैक है, वह अपनी किसी सूचना या समाचार को टेक्स्ट, फोटो या वीडियो के जरिए करोड़ों लोगों तक पहुंचाने की ताकत रखता है। हालांकि यह बात सिद्धांत रूप में ही सच है और ऐसा अक्सर नहीं होता, लेकिन इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि यह संभव है। अब देश दुनिया की कई सूचनाएं हम तक इसी तरह पहुंचने लगी हैं।

परंपरागत पत्रकारों के लिए यह चुनौतीपूर्ण स्थिति है। इंटरनेट की वजह से लोग पहले से ही तमाम माध्यमों से खबर लेने में सक्षम हो चुके हैं। ऐसे में करोड़ों पत्रकारों के युग में उनके लिए विश्वसनीय होने और सबसे अलग होने की चुनौती भयंकर शक्ल ले चुकी है। एक दुर्घटना या किसी नेताजी के एक भाषण का जो वीडियो हर किसी के पास है या प्रधानमंत्री का एक ट्वीट जो सबके पास है, उसके बारे में कोई पत्रकार अलग से ऐसा क्या बताएगा, जिसे जानने देखने के लिए एक ग्राहक अखबार खरीदे या टीवी देखे? किसी रैली में सैकड़ों की भीड़ को लाखों की भीड़ बताने के दौर का भी अंत हो चुका है। ऐसा कोई पत्रकार अपनी साख खोने के जोखिम के साथ ही कर सकता है। वर्तमान समय में अगर पत्रकारिता पेशे की इज्जत निम्नतम स्तर पर पहुंच चुकी है और पिछले दस साल में

जिस भी फिल्म में पत्रकार आया है, वह विलेन या मसखरे की शक्ल में आया है, तो इसकी दर्जनों वजहों में से यह भी एक है कि समाचारों के ग्राहक अब कई माध्यमों के बीच अपना सच चुनने की स्थिति में आ गए हैं।

उपभोक्ताओं के लिए न्यूज कंज्यूम करने का प्लेटफॉर्म लगातार बदल रहा है। मिसाल के तौर पर मेरे अपार्टमेंट में जो न्यूजपेपर एजेंट सारे फ्लैट्स में अखबार देता है, उसने मुझे कुछ दिलचस्प जानकारियां दीं। उसकी दी कई जानकारियों में यह सूचना इस लेख के लिए महत्वपूर्ण है कि 200 फ्लैट वाले इस अपार्टमेंट में जिन फ्लैट्स में रहने वाले सारे लोग 25 साल से कम उम्र के हैं, वहां कोई अखबार नहीं जाता। जाहिर है, 25 साल से कम उम्र के लोग देश दुनिया की सूचनाओं और समाचारों से अनजान नहीं हैं। शायद वे पुरानी पीढ़ी से ज्यादा अवेयर है, फर्क सिर्फ यह है कि उन लोगों ने सूचनाएं लेने का तरीका बदल लिया है। इन लोगों के लिए सूचनाओं का माध्यम वेब हो चुका है। पूरी दुनिया के साथ भारत में भी ऐसे लोगों की संख्या बढ़ रही है।

एक और बदलाव यह है कि सूचनाओं और समाचार का प्राथमिक स्रोत सोशल मीडिया बनता जा रहा है। यूट्यूब, फेसबुक, व्हाट्सएप, ट्विटर, इन्स्टाग्राम, लिंक्डइन जैसे माध्यम अब बड़ी संख्या में लोगों के लिए वह जरिया बन चुके हैं, जहां उन्हें देश, दुनिया या पड़ोस में होने वाली हलचल की पहली जानकारी मिलती है। ऐसे लोग कई बार न्यूज वेबसाइट पर जाते होंगे और इस बारे में कोई स्टडी नहीं है कि कितने लोग सोशल मीडिया में कोई सूचना पाने के बाद ऐसा नहीं करते। लेकिन सूचना के पहले स्रोत के रूप में सोशल मीडिया का स्थापित होना स्थापित तथ्य बनता जा रहा है। इसके महत्व का अंदाजा इस बात से भी लगा सकते हैं कि मंत्री से लेकर प्रधानमंत्री तक और अब तो कंपनियां भी कई बार अपनी घोषणाएं सबसे पहले सोशल मीडिया पर डाल रही हैं।

एक समय था जब केंद्र सरकार की खबरें मीडिया को देने वाली संस्था प्रेस इनफॉर्मेशन ब्यूरो यानी पीआईबी पत्रकारों को प्रेस रिलीज जारी करता था। यह रिलीज छपे हुए कागज पर पत्रकारों को मिलती थी। प्रेस रिलीज पाना पत्रकारों का विशेषाधिकार था। इसके बाद वे इस सूचना को अगले दिन अखबारों के जरिए पाठकों को पहुंचाते थे।

लेकिन अब अरसा हो चुका है जब पीआईबी पत्रकारों को प्रेस रिलीज जारी करता था। अब प्रेस रिलीज पीआईबी की वेबसाइट पर अपलोड की जाती हैं और जिस समय ये रिलीज पत्रकारों को मिलती है, उसी समय दुनिया के हर उस व्यक्ति के पास यह होती है, जिसके पास इंटरनेट है और जिसकी प्रेस इनफॉर्मेशन ब्यूरो की रिलीज में दिलचस्पी है। कई कंपनियां भी प्रेस रिलीज अपनी साइट पर अपलोड करने लगी हैं। सूचनाओं के सीमित और नियंत्रित प्रवाह के अभ्यस्त पत्रकारों के लिए यह नई और कुछ के लिए तो यह विषम परिस्थिति है।

टी.वी. पर समाचार अब भी देखा जा रहा है। लेकिन समाचार के परंपरागत अर्थों में देखें तो टी.वी. का समाचार समाचार नहीं है। वह दरअसल मनोरंजन है और टी.वी. सीरियल से यह सिर्फ इस मायने में अलग है कि इसमें तात्कालिक सूचनाएं हैं। टी.वी. समाचारों को लेकर न्यूजरूम की सोच से लेकर उसे पैकेज करने की प्रक्रिया में इस बात का ध्यान रखना जरूरी है कि उसकी शक्ल एंटरटेनमेंट की हो, ताकि लोग ज्यादा से ज्यादा समय तक टीवी से चिपके रहें। हालांकि इस शक्ल में भी टी.वी. का समाचार कब तक जिंदा रह पाएगा, इसे लेकर पक्के तौर पर कुछ कहा नहीं जा सकता। मनोरंजन के क्षेत्र में टी.वी. समाचारों का बाकी के मनोरंजन, खेल और फिल्म तथा कार्टून चैनलों के साथ कड़ा मुकाबला है। जिन लोगों ने समाचार के पहले स्रोत के तौर पर वेब को स्वीकार कर लिया है, उनके लिए टीवी समाचारों का समाचार के तौर पर महत्व खत्म हो चुका है। दिल बहलाने के लिए वे बेशक टी.वी. चैनल देखते हैं।

एक और बड़ा बदलाव जो आते-आते रह गया है और कभी भी आ सकता है, वह है वेब पर न्यूज देखने के लिए ब्रॉडबैंड का फ्री होना। यानी, अब जब आप कुछ खास वेबसाइट पर जाएंगे तो वहां सर्फिंग करने पर आपका ब्रॉडबैंड खर्च नहीं होगा। ऐसी साइट्स में न्यूज साइट्स भी हो सकती हैं। 'नेट न्यूट्रलिटी' के नाम पर भारत के बड़े समाचारपत्र और टीवी समूहों की सामूहिक लॉबिंग की वजह से हालांकि यह होना टल गया है लेकिन परंपरागत मीडिया कॉरपोरेशन इसे कब तक रोक पाएंगे, यह देखना होगा।

देश के ज्यादातर न्यूज चैनल लंबे समय तक फ्री टू एयर रहे और कई न्यूज चैनल अब भी फ्री टू एयर हैं। इन्हें दिखाने के लिए केबल ऑपरेटर या डीटीएच प्लेटफॉर्म कोई फीस नहीं लेते। बल्कि न्यूज चैनल इस बात के लिए बड़ी रकम खर्च करते हैं कि उन्हें दिखाया जाए। इतना खर्च करके एक न्यूज चैनल खुद को फ्री टू एयर बना देता है और दिखाए जाने के लिए केबल और डीटीएच प्लेटफॉर्म को करोड़ो रूपये की फीस भी देता है तो इसकी सबसे बड़ी वजह यह है कि ये चैनल विज्ञापन से कमाई करके उसकी भरपाई करने के मॉडल पर चलते हैं। इसी तरह अखबार भी अपने प्रोडक्शन कॉस्ट के चौथाई से भी कम कीमत पर इसलिए बेचे जाते हैं क्योंकि उनके लिए कमाई का मुख्य स्रोत सर्कुलेशन रेवेन्यू नहीं, बल्कि एड रेवेन्यू है।

टीवी और प्रिंट में जिस तरह फ्री या कम कीमत पर माल बेचने का चलन है, वह वेब पर न हो, इसका कोई कारण नहीं है। ये साइट अपनी कमाई और बाकी खर्च की भरपाई विज्ञापनों से करेंगे। अब कल्पना कीजिए कि फेसबुक जैसी सोशल साइट पर सर्फिंग करने से अगर ब्रॉडबैंड का खर्च न आए और अगर फेसबुक न्यूज देना शुरू कर दे तो? यानी फेसबुक, किसी खबर का लिंक न देकर सीधे सीधे खबर दे और फेसबुक देखने का ब्रॉडबैंड खर्चा जीरो हो तो क्या पत्रकारों की दुनिया वैसी ही रह जाएगी, जैसी अभी है?

मुझे नहीं लगता इसकी वजह यह है कि अपने भारी भरकम यूजर बेस के साथ फेसबुक, न्यूज स्पेस का बड़ा हिस्सा घेर लेगा। वह समाचारों के लिए किसी एक या दो समाचार संकलनकर्ता से समझौता करेगा जिनके साथ वह विज्ञापन रेवेन्यू साझा करेगा या जिनसे वह खबरें खरीद लेगा। इस तरह किसी एक बाजार में दर्जनों चैनलों और अखबारों की जगह एक या दो न्यूज विक्रेता रह जाएंगे, जिनका माल फेसबुक बेचेगा। न्यूज कंज्यूम करने वालों के लिए इसका मतलब यह होगा कि समाचार जानने का उनका खर्च शून्य हो जाएगा बदले में वे विज्ञापन देखेंगे और माल खरीदेंगे। फ्री टू एयर न्यूज चैनलों और लगभग कौड़ियों के मोल मिल रहे अखबारों के जरिए उसके साथ यही हो रहा है। फर्क सिर्फ यह है कि ऐसा ही वेब पर भी हो जाएगा। साथ ही फेसबुक अपने यूजर के सर्फिंग बिहेवियर

को ध्यान में रखते हुए उसे प्राथमिकता के आधार पर वैसी खबरें देगा, जिनमें उनकी या उनके दोस्तों की दिलचस्पी है।

निष्कर्ष :

पत्रकारों के लिए यह स्थिति बेहद चिंताजनक हो सकती है, क्योंकि इसका मतलब यह है कि बड़ी संख्या में चैनल और अखबार बंद होंगे। पत्रकारिता तो फिर भी होती रहेगी। करोड़ों लोग पत्रकारिता कर रहे होंगे। सूचनाओं और समाचारों का प्रवाह पहले से कई गुना बढ़ चुका होगा। लेकिन पत्रकार के पेशे का आकार बेहद छोटा हो चुका होगा। विश्वसनीयता संदेह के घेरे में होगीं।

यह सवाल पूछा जाना चाहिए कि पत्रकारिता के भविष्य का फैसला सत्य और मुनाफा में से किसके आधार पर किया जाए?

*****

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :

1. पत्रकारिता के अनुभव – डॉ. इंद्र विद्या वाचस्पति, पृ.सं.– 82
2. जनसंचार माध्यम और पत्रकारिता सर्वांग- डॉ. जितेन्द्र वत्स, डॉ. किरणबाला, पृ.सं.-39
3. हिंदी पत्रकारिता : संवाद और विमर्श – कैलाश नाथ पाण्डेय, पृ.सं.– 37
4. पत्रकारिता : विविध विधाएं – डॉ. राजकुमारी रानी, पृ.सं.– 16
5. www.scotbuzz.org/2017/12/patrakarita.html
6. पत्रकारिता : विविध विधाएं – डॉ. राजकुमारी रानी, पृ.सं.– 16
7. वही... पृ.सं.- 17
8. वही... पृ.सं.- 18
9. हिंदी पत्रकारिता : संवाद और विमर्श – कैलाश नाथ पाण्डेय, पृ.सं.– 41
10. वृहत् हिंदी पत्रकारिता कोश, पृ.सं.- 676
11. पत्रकारिता : विविध विधाएं – डॉ. राजकुमारी रानी, पृ.सं.– 17
12. Speech in Parliament- 16/05/1951 (Facebook.com/withRG)
13. हिंदी पत्रकारिता : संवाद और विमर्श – कैलाश नाथ पाण्डेय, पृ.सं.– 44
14. वही... पृ.सं.- 40
15. वही... पृ.सं.- 40
16. वही... पृ.सं.- 40
17. वही... पृ.सं.- 40
18. वही... पृ.सं.- 40
19. वही... पृ.सं.- 41
20. वही... पृ.सं.- 41
21. जनसंचार माध्यम और पत्रकारिता सर्वांग-डॉ. जितेन्द्र वत्स, डॉ. किरणबाला, पृ.सं. 48

22. आधुनिक पत्रकारिता की रूपरेखा – इन्द्र चन्द रजवार, पृ.सं.– 31

23. वही... पृ.सं.- 32

24. वही... पृ.सं.- 32

25. वही... पृ.सं.- 33

26. पत्रकारिता और पत्रकारिता – डॉ. अरुण जैन, पृ.सं.– 2

27. Journalist in India-Rangawami Parthsarathy, P. 2 Delhi,1995/ हिंदी पत्रकारिता : संवाद और विमर्श – कैलाश नाथ पाण्डेय, पृ.सं.– 117

28. पत्रकारिता और पत्रकारिता – डॉ. अरुण जैन, पृ.सं.– 4

29. वही... पृ.सं.- 5

30. वही... पृ.सं.- 8

31. जनसंचार माध्यम और पत्रकारिता सर्वांग-डॉ. जितेन्द्र वत्स, डॉ. किरणबाला, पृ.सं.-48

32. वही... पृ.सं.- 52-53

33. वही... पृ.सं.- 53

34. पत्रकारिता और पत्रकारिता – डॉ. अरुण जैन, पृ.सं.– 25

35. आधुनिक पत्रकारिता की रूपरेखा – इन्द्र चन्द रजवार, पृ.सं.– 43

36. हिंदी पत्रकारिता : संवाद और विमर्श – कैलाश नाथ पाण्डेय, पृ.सं.– 143

37. http:hindi.newsclick.in/Revolutionary-Azimullah-Khan-1857

38. भारतेन्दु हरिश्चंद्र- डॉ. रामविलास शर्मा, पृ.सं.-117/ जनसंचार माध्यम और पत्रकारिता सर्वांग – डॉ. जितेन्द्र वत्स, डॉ. किरणबाला, पृ.सं.– 61

39. हिंदी पत्रकारिता : संवाद और विमर्श– कैलाश नाथ पाण्डेय, पृ.सं.– 144

40. वही... पृ.सं.- 162

41. साप्ताहिक हिन्दुस्तान – श्री शिवनारायण खन्ना, 23 मई 1976/ जनसंचार माध्यम और पत्रकारिता सर्वांग – डॉ. जितेन्द्र वत्स, डॉ. किरणबाला, पृ.सं.– 62

42. हिंदी पत्रकारिता : संवाद और विमर्श – कैलाश नाथ पाण्डेय, पृ.सं.– 148

43. जनसंचार माध्यम और पत्रकारिता सर्वांग-डॉ. जितेन्द्र वत्स, डॉ. किरणबाला, पृ.सं.-66

44. वही... पृ.सं.- 68

45. हिंदी पत्रकारिता : संवाद और विमर्श – कैलाश नाथ पाण्डेय, पृ.सं.– 41